



卐

पुस्तक-विभाग-संस्कृत-विभाग

जैन-विवाह-संस्कार



अचल सौभाग्याकांक्षिणी
कुमारी फनकलता वैनाड़ा
के
शुभ विवाहोपलक्ष मे
स्वजाति यन्धुय्यों की भेंट ।



मटरूमल वैनाड़ा

प्रकाशक—

सेठ मटरूपल वैनाड़ा (राय साहब)

प्रो० मयुरादास पन्मचन्द, वैकर्म

बलनगन, आगरा ।

प्रथम बार १९०८ प्रति

बार निघाण २७५३

मुद्रक—

दी कौरौनशान प्रेस,

३७६३, शीतलागली,

आगरा ।

आद्य निवेदन

हमारी बहुत समय से अभिलाषा थी कि जैन संस्कारों और वर्तमान जैन समाज के रीति रिवाजों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी 'जैनपद्धति' के अनुसार विवाह संस्कार कराने की पुस्तक तैयार की जाय जिससे सर्वमाधारण भाई भी सुगमता और सुभीते के साथ इस कार्य को कर सकें। इसके लिए २२० विद्वद्गुरु पं० नृसिंहदामजी काँदेय चावली (आगरा) निरामी हमें अपने जीवनकाल में ही कुछ साहित्य लिखकर दे गये थे, उसके और नयपुर निरामी श्री० पंडितवर्य छत्ते लालजी द्वारा सगृहीत जैन विवाह पद्धति के आधारों से हमें प्रस्तुत पुस्तक को तैयार करने में बहुत सहायता मिली है अतः हम उन दोनों ही विद्वानों के बहुत आभारी हैं।

पिछले दिनों में हमारी ओर से 'जैनविधि मुहूर्त पूजा' और 'जैन-आगदानपद्धति' नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जैनसमाज ने दोनों ही पुस्तकों को अपनाकर अपने धार्मिक श्रद्धा क्षेत्र में पर्याप्त वृद्धि की है और मिथ्यात्व का परित्याग किया है। अब इस पुस्तक में 'विनायक विधान, से लेकर विवाह पर्यन्त' सभी कार्यों का क्रमपूर्वक खुलासा किया गया है। विवाह कार्य के लिए उचित सामग्री, विवाह कार्यक्रम, वेदी आदि के नक्शे सचित्र इस पुस्तक में दिये गये हैं जिन्हें देवकर माधारण भाषा जानकार भी विवाह कार्य को सरलता से सम्पादित कर सकेंगे। इस कार्य को करने के पूर्व एक बार पुस्तक विधि और उसके योग्य सामग्री को अवश्य अवश्य अवलोकन कर लेना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक को सगृहीत करते समय इसकी उपयोगिता, द्रव्य, क्षेत्र और काल की ओर विशेष ध्यान रक्खा गया है, क्योंकि प्रचलित कई विवाह पद्धतियाँ तो इतने विस्तार में लिखी गई हैं कि उनके अनुसार कार्य करने में अधिक आसानी ही जाती है, और कई इतनी मंजिप्त हैं कि उनमें पूर्ण विधि भी नहीं हो पाती है। अतः विवाह के प्रत्येक अङ्ग की विधि को बनाते हुए एवं यथावसर मंत्रों का शुद्ध प्रयोग दिखाने हुए शास्त्रात्त क्रिया-कलाप का इसमें प्रतिपादन किया है। आशा है सभी धर्मात्मानन्दु इस पुस्तक से समय पर लाभ उठाते हुए जैनधर्म की प्रभावना करेंगे।

यद्यपि प्रयत्न तो यही किया गया है कि पुस्तक में अशुद्धियाँ और त्रुटियाँ न रह फिर भी यदि कहीं होगई हों तो विद्वद्गण उनका शोध कर काम में लावें।

“पद्म कुटीर” }
धी० नि० २४७३ }

३

विनयमोराध्व—
पदरूमज्ज धनाडा

दो शब्द ।

किसी भी धर्म और जाति के सांस्कृतिक संरक्षण के लिये अत्यावश्यक यह है कि उनके धार्मिक, सामाजिक, लौकिक सिद्धान्तों और रीति रिवाजों का अधिक रूप से प्रचार किया जाय। प्रस्तुत पुस्तक इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए श्रीमान् राय साहय सेठ मटरूमलनी घेनाड़ा (प्रो० कर्म सेठ मधुरादामजी पदमचन्द्रजी घेनाड़ा आगरा) ने अपनी उद्येष्ट पुत्री चिरजीविनी वनकलता के शुभ विवाह उपलक्ष्य में सद्बुद्धि में प्रकाशित कर वितरण की है। उक्त सेठ साहय की आन्तरिक भावना रही है कि जैनसमाज में संस्कृति की रक्षा के लिये ऐसा साहित्य समय-पर प्रकाशित किया जाय जो ग्राम-पर और नगर-पर में जैन धर्म की प्रभावना कर सके। मेरा ध्यान है कि बुद्ध समय पूर्व तक विवाह महेश गृहस्थ के धार्मिक संस्कार भी अन्य पंडितों द्वारा किये जाते थे और वे अथ भी यत्र तत्र होते ही हैं, परन्तु इन कार्यों को शास्त्रोक्त विधि से सम्पन्न किया जाय और मिथ्यात्व से बचकर जैन संस्कार से विवाह विधि की जाय, यही इस पुस्तक को प्रकाशित करने का भाव है।

इस पुस्तक के संशोधन का भार उक्त सेठ साहय ने मुझे सौंपा और अपने द्वारा तैयार कराई हुई एक कच्ची प्रति को मेरे पास भेज भी दिया। मैंने उपरोक्त प्राचीन और नई प्रतियों के आकार में इसे प्रामाणिक रूप से संशोधित किया है। यह पुस्तक कितनी उपयुक्त और प्रामाणिक है, इसका तो जैन समाज उपयोग कर ही निर्णय कर सकेगी।

अजमेर
अक्षय तृतीया
वी० सं० २४७३

जैनधर्म-सेवक
हेमचंद्र कौदिय, शास्त्री

वेदोंकी रचना

प्रथम (सबसे ऊपर की) कटनी पर सिद्ध यत्र स्थापित करना ।

दूसरी (दोच की) कटनी पर शास्त्रजी स्थापन करना।

तीसरी (नीचे की) कटनी पर अष्ट भंगल द्रव्य स्थापित करना।



कल्प



परब्रह्म



पराशर



एतज्ज



सामर



वैष्णव



धृतर



दुष्यंत



पुत्र



गणपति कुंड



तीर्थकार कुंड



साधन्य कर्मरि कुंड



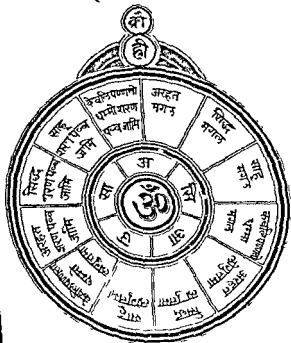
धृतर

चतुषष्टियंत्र



सिद्धयंत्र

(विनायक यंत्र)



सूचना

यह यंत्र यदि समय पर बना बनाया न मिले तो केदार से -
रकाबी पर बनाकर स्थापन कर देना चाहिए ।



विवाह-कार्य के लिये आवश्यक वस्तुएँ।

विवाहमण्डल, सस्कार-वेदिका, ध्वजदण्ड, हवनकुण्ड,
त्रिकटिनी-वेदिका ॥

[इनको निमाण करने का खुलासा पृष्ठ ७ पर देखिये]

अष्टमंगल द्रव्य [म्कारी, पखा, कलशा, ध्वजा, चमर, ठोना,
छत्र और दर्पण]

[ये चीजें मौजूद न हों तो रक्षापी में केशर से लिख कर
इनकी रचना करनी चाहिये]

धर्मचक्र—तीन गोल चक्र में २४ ध्वजा लगी हुई ।

छत्रत्रय—तीन छत्र ।

सिंहासन २ -

जैन हस्त लिखित-शास्त्र महापुराण आदि ।

यत्र—विनायक यंत्र और चौसठ शक्ति यत्र ।

[यदि यत्र न मिल सकें तो आगे चित्रित यंत्र रक्षापी में
लिख लेना चाहिये ।

पूजन के बर्तन और अष्ट द्रव्य बनी हुई [शक्त्यनुमार]
 हवन सामग्री—पिस्ता, बादाम की गुला, किशमिस, गोले क
 चूर्ण चिरौंजी, छुहारा मुगंघघाला, देवदारु, बुरा, कपूर, चन्दन
 चूरा [ये सब पाउं १ सेर लेना चाहिये और इसा चन्दाने
 र्ध शुद्ध लेना चाहिये]

समिधि—आक, टाक, आम, पीपल, बड़ की सूती धुन
 रहित लकड़ी, सनेद चन्दन लाल चन्दन की पतली लकड़ियों ।

अथ धार्जे—घाटु २ काठ के, (घर बन्धा के हाथ से एक
 हाथ के) हवन द्रव्य के दो पात्र, भठी छाटी ४, रोली, हल्दी,
 दूर्वा, डाम, कलश छोटे ४, कलश बड़ा १ सेर जल का, यज्ञो
 पवीत ४, एहर १ गज, आसन कुशा के ५ फूलमाला १०, बड़ी
 फूलमाला ४ जवाली १, श्रीपत्र ५, दीपक ८, दियासलाई, कपूर,
 रुई, आघ्र और अशोक क पत्ते, सुवारी, पचरत्नी (पाच रत्न)
 सरसा पीली, धान की खीले, चमर, पूजन के बतन, थाल २,
 मारी १, चन्दा १, खुटियाँ १२, अगर पत्ती, घुप, धारते का
 थाल १, महदी ।

नोट—उपरोक्त सामग्री ठीक तरह से शुद्ध एकत्रित कर
 लेनी चाहिये । यदि कुछ देशकालानुकूल अन्तर हो ता विधि
 विधान का ध्यान रखते हुए परिवर्तन कर लेना चाहिये ।

परिशिष्ट ।

कुम्भकलश या मंगल कलश—यह सोना, चादी, पीतल, तांबा आदि का घनाकार पात्र होना चाहिये । इसमें आगे बताये हुए मन्त्र द्वारा लवण आदि से प्राप्त कृत जल भर कर उसे श्रीकलश और केशरिया वस्त्र द्वारा ढरू देवे और उसमें नवरत्न, अक्षत, पुष्प, विजौरा आदि ढाल देवे । बाद में इसे पुष्पमाला, आम के पत्ते दूधा, डाम, स्वस्तिक आदि से सुशोभित करे ।

ॐ हा ह्रीं हूं ह्रीं हूं नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म
तिगच्छिकेसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रो-
हितास्या हरिद्धरिकान्ता सीतासीतादा नारी नरकान्ता
सुवर्णरूप्यकृता रक्तारक्तोदापयाधि शुद्धजन्तसुवर्णघट प्रक्षा-
लित नवरत्नगथाक्षतपुष्पार्चितमामोदरु पत्रित्र कुरु कुरु भू
भू भूँ भूँ व व म म ह ह स स तं त प प द्रां द्रां द्रां
द्रौ द्रौ हं सः स्वाहा ।

विवाह आदि कार्यों में कलश की स्थापना कुछ देर के लिये की जाती हो तो उसमें पानी न भरना चाहिये । यह कलश पुण्याह-
घाचन सकल्प, शान्ति घारा इन कार्यों के काम में आता है ।

रक्षा-कङ्कण—सामान्यत यह कंकण मंगलमूर्त (कलाया)
अथवा रत्न आदि का होता है । परन्तु विशेषतः केशरिया

साल वस्त्र में अक्षत, राई लोहा चांदी या तांबा आदि का का
लेकर एक छोटी पोटली मंगलसूत्र में अच्छी तरह बांध लेनी चा
हिए और उसे घर कन्या के कमरा दाये और बायें हाथ में बांध दे
नाहिये । यह रक्षाव-धन घर कन्या के दैनिक जैन पुत्रकर्म कर
की प्रतिज्ञा का चिह्न है और इसका प्रयोजन दीक्षित करने का है
इसमें छद्म गांठ देने का भी प्रथा प्रचलित है ।

विवाह कार्य-क्रम ।

मंगलाचरणपूर्वक विवाह प्रयोजन ।

विनायक विधान

द्वितीय विनायक

महसस्कार या विवाहमण्डप निर्माण

भाण्डानयन

संस्कार-वेदी निर्माण

त्रिकटिनी वेदी निर्माण

कुण्ड निर्माण

ध्वजदण्ड स्थापन

वरयात्रा गमन

अलूफा

गोरण विधान

वर आगमन

विवाह विधान

मंगलकलश स्थापन

तिलककरण

परिणयनवाक्य

संकल्पधारा

देवशास्त्र गुरु पूजन

सिद्धपूजन

यन्त्रार्चनाभिषेक

सप्तदशार्चनपूर्वक जाप्य

नवदेव पूजन

सिद्धपूजन

धृतपूजन

गुरुपूजन

धर्मचक्रपूजन

} त्रिकटिनो पूजन

हवन-विधि

कुण्डपूजन

पीठिका मंत्र आहुति

प्रन्थिबधन

हथलेबा

सप्तपदी

गृहस्थाचार्य का उपदेश

पुण्याहवाचन

अन्याङ्गनापरिहृते निजदारवृत्त ।
 पर्षोगृहस्थजनता विहिताऽपमास्तेऽ
 नादिप्रवाह इति सन्ततिपालनार्थं
 येव कृती मुनिवृषी विहितादर'स्यात् ॥३॥

कर्मभूमि क प्रारम्भ में श्री नाभिराय के पुत्र जिन श्री १००८
 ऋषभ तीर्थंकर भगवान् ने सद्गृहस्थों के लिये पट्कर्म सहित
 श्री गृहस्थधर्म का मार्ग बताया वे सदैव पूज्य एवं जयवन्त रहें ।
 श्री १००८ जिनसेन स्वामी ने सनातन प्रवृत्ति के अनुसार, मन्त्र
 समुदाय सहित जिस जैन विवाह पद्धति का वर्णन किया है वे
 जिनसेनाचार्य भी जयवन्त रहें । सभी परस्त्रियों के त्याग सहित
 कवल अपनी परिणीता स्त्री में विषय भोगों का नियत रखना
 विवाह है और गृहस्थ क लिये शास्त्र विहित है, इससे सन्तति
 परम्परा चलती है और वह गृहस्थ मुनिवर्म में आदरवान
 होता है ।

विनायक विधान ।

यह विनायक विधान लग्न का कार्य होने पर किया जाता है ।
 यह सम्पूर्ण विधियों का नाश करने वाला और सभी मंगलों का
 दने वाला है । विवाह के पाँच या सात दिन पहिले किसी शुभ
 दिन में वर या कन्या अपने कुटुम्बी और सम्बन्धियों के साथ
 मय गात्रे बाजे क भामन्दिरग्री जात्रे और विवाह कार्य क
 निर्विघ्न समाप्त होने क लिये धार्जित द्रुदेव और सिद्ध-यत्र का
 आभिषेक सहित पूजन कर और जिन सहस्र नाम का पाठ कर
 अर्घ्य चढ़ाव । यह कार्य या तो वह स्वय करे अथवा किसी दूसरे
 क द्वारा अपनी उपस्थिति में करावें । पूजन क उपरान्त नीचे
 लिखे अपराहित मन्त्र का १०८ बार जाप करें ।

एषो अरहनाणं, एषो सिद्धाणं, एषो आइरीयाणं,
एषो उवज्झायाणं, एषो लोएसव्वसाहूणं ।

इसके बाद वर या कन्या पक्षी भक्ति के साथ नमस्कार कर गाजे वाजे और सौभाग्यवती स्त्रिया के साथ मंगलगान करते हुए यन्त्र को नालको आदि में बिनयपूर्वक तिराजमान कर अपने घर लावें और वन्दनवार, पुष्पमाल तथा अन्य वस्तुओं से सुशोभित कर किसी घर में उच्च स्थान में उभे विराजमान कर दें । जब तक विवाह कार्य समाप्त न हो जाय तब तक उसका अभिषेक व पूजन स्वयं करें या दूमरों से अपनी मौजूदगी में करावें । इसी स्थान पर एक अर्खंड दाप निम्नलिखित मन्त्र पद कर स्थापित करें ।

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहर दीपक संस्थापयामि स्वाहा ।

और परिशिष्ट में बताये हुए ढग से मंगल कलश बना कर नीचे लिखा मन्त्र पद कर कलश स्थापन कर दें ।

ॐ अथ भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो
मते अस्मिन् त्रिधोयमान विवाहकर्मणि होमपरिहय भूमि
शुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं क्रियाशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याह-
वाचनार्थं नवरत्न पुष्पाक्षत् त्रीजपूरशोभित शुद्धमासुक तीर्थ-
जल पूरितं मंगल कलश संस्थापन करोम्यहम् भूर्वीं इर्वीं ह
सःस्वाहा ।

बाद में रक्षाकंकण को विधिपूर्वक तैयार कर सुवासिनी द्वारा वर कन्या के हाथ में नीचे लिखे श्लोक व मन्त्र पद कर बैधया देवें या गृहस्थाचार्य सुद वीध देवें ।

मिनन्द्रगुहपूजन, श्रुतवच सदाधारणम् ।
 स्वशीलपमरक्षण, ददनसत्तपाट्ट हण ॥
 इति प्रथित पट्ट क्रिया निरतिचारमास्तांते ।
 त्यय मयनकर्मणे विहितरक्षिषायन्धन ॥

ॐ जायापत्योरेतयो गृहीतपाणयोरेतस्यात्पर आघतुर्यात्र
 आहोस्त्रिदासप्तमादिज्या परमस्यपुष्टयस्य गूढणामुपास्ति,
 देवानामर्षेनाग्निहोत्र सत्कारोऽभ्यागतानात्रिधाणन वनीय-
 कानां इत्येव विधातु मतीज्ञाया सूत्र कङ्कणसूत्र व्यपदेशभाक्
 रजनीसूत्र मियोमणिवन्ये मणद्वते स्वाहा ।

यह सब कार्य समाप्त होने पर आये हुए सज्जनों का मरकार एवं दान करना चाहिये यथासम्भय आगरण करना चाहिये ।

द्वितीय विनायक

यह कार्य प्रथम विनायक के बाद और विवाह के पूर्व करना चाहिये किसी शुभदिन में घर या कन्या को उबटन स्नानादि कराकर घर में स्थापित विनायक यन्त्र का शुद्धिपूर्वक अभिषेक पूजन के स्वयं करें या अपने समक्ष में दूसरों के द्वारा करावें और उसी स्थान पर १०८ बार अपराजित मंत्र का जाप करें । इसके बाद में घर या कन्या वस्त्रामूपणों से सुसज्जित मीभाग्य बती स्त्रियों के साथ गाजे याजे से मंगलगान गाते हुए उपयुक्त सवारी में बैठकर अष्टद्रव्य सहित श्रीकृत क्षेत्र श्रीमन्दिर की जावें और भक्तिपूर्वक मंगलमय स्तुति पढते हुए अर्घ्य चढावें । यदि सावकाश हो तो अभिषेक और पूजन भी करें । इसके बाद पूर्व की तरफ वापिस निज घर आ जायें और विनायकयन्त्र के पुनः कर्ण बधावें ।

नोट—यदि कारणवश प्रथम विनायक को क्रिया उस दिन न हो पाई हो तो कुल उस दिन का कार्य इस दिन कर लेना चाहिये ।

गृह-संस्कार

जहाँ विवाह कार्य हो वहा कल्पवृक्ष, राडवाग्नि पुष्पमाला, स्तूर, खट्टर, सूर्य, लक्ष्मी आदि मागलिक चित्र आदि की रचना करे और नवीन वस्त्र आदि से विवाह मंडप आदि का निर्माण करे, जिससे अन्य पुरुषों को भी विवाह की जानकारी हो जाय । इसही दिन अर्थात् द्वितीय विनायक के दिन ही विवाह मंडप, तोरण ध्वजस्तम्भ, मस्कारवेदिका, हवनकुण्ड आदि की रचना करनी चाहिये और उसे फक्षलीस्तम्भ, इलुदड आदि से सुशोभित कर देना चाहिये ।

भाण्डानयन

यह कार्य भी द्वितीय विनायक के दिन ही कन्यापक्ष वालों को करना चाहिये । भाण्डानयन का प्रयोजन खवरी के लिये मृत्तिका (मिट्टी का) बर्तन लाने का है । इसके लिये सौभाग्यवती स्त्रियाँ कुम्भकार के यहाँ जायें और वहाँ से २० बड़े छोटे उतार के घट और एक छोटा घट थाम के लिये लायें । कुम्भकार को इसके लिये समुचित वस्त्र एवं नक्षत्र द्रव्य देकर मन्तुष्ट्र करें और वहाँ से आकर बर्तनों को सुरक्षित स्थान पर रखें । पाद में उनमें सुवारी, हल्दी, अक्षत, मूग, धान आदि डालकर घटों पर मागलिक स्वस्तिक चित्र आदि बनाकर वेदिका के चारों ओर पाच पाच बर्तन रखने के काम में तथा एक घट ध्वजस्तम्भ पर रखने के काम में लायें ।

नोट—इन घंटों की यावत कुम्भकार को पुर्य में ही सूचना कर देनी चाहिये जिससे समय पर कार्य में अड़चन न हो। यदि वही कुम्भकार क घर पर जाने की सुविधा न हो तो कुम्भकार द्वारा लाये हुए बर्तनों को घर के बाहर से ही मीभाग्यवती स्त्रियों ले लें और कुम्भकार को यथोचित वस्त्र आर भट दे दें।

संस्कार वेदिका

विवाह मंडप क ठीक मध्य में क-या क हाथ से चार हाथ प्रमाण लम्बी चौड़ी और एक हाथ ऊंची कच्ची ईंट गारे से वेदी बनवाना चाहिये। इसके चारों कोनों पर भाण्डानयन क्रिया में लाये हुए २० घंटों का एक एक कोने पर पांच पांच रख कर व हें लाल या केशरिया पत्र स टक दना चाहिये। ध्यान रहे कि घट इतने सुरक्षित रखे जाय कि वे गड़बड़ाव नहीं। वेदी का चँदोबा, चित्र, गीटा आदि से चित्ताकर्षक बनाकर सुशोभित कर देना चाहिये। वेदी क चारों कोनों पर कदला स्तम्भ और इज्जुदण्ड घन्दनधार पुष्पमाला भी लगा देनी चाहिये।

इस वेदी पर ही वैवाहिक सब कार्य होता है। इस पर वर कन्या, गृहस्थाचार्य, वर क-या क मामा तथा पिता एवं दोनों की माताओं को ही जाने का अधिकार है। इस ही वेदी पर नीचे लिखे अनुसार त्रिकटिना वेदी, हवनकुण्ड और ध्वजदंड का निमाण करना चाहिये।

त्रिकटिनी वेदी

यह वेदी संस्कार वेदिका क ऊपर उत्तर या पूर्वमुखी एक हाथ लम्बी चौड़ी एक ऊंची होती चाहिये। इसकी ऊंचाई में तीन कटिनी समभाग की बनाना चाहिये जिन पर ऊपर वाली पर सिद्धविनायक यत्र, दूसरी पर शास्त्र और तीसरी पर द्रव्य और चौसठश्राद्ध यत्र विराजमान करना

चाहिये । इसी कटिनी पर दक्षिण भाग में घर्मचक्र और वाम भाग में छत्र-त्रय स्थापित करना चाहिये ।

नोट—यदि वेदी आदि को पीले रंग से रँग दिया जाय तो अत्युत्तम है ।

इवनकुण्ड

सस्कार वेदी के ऊपर तथा त्रिकटिनी वेदी के दक्षिण भाग या सम्मुख एक हाथ स्थान छोड़ कर निम्नप्रकार तीन कुण्ड की रचना करनी चाहिये ।

त्रिकटिनी वेदी से एक हाथ आगे मध्य में चौकोण तीर्थकर कुण्ड तथा इसके दक्षिण भाग में सामान्य केवली कुण्ड त्रिकोण और वाम भाग में गोल गणधरकुण्ड बनाना चाहिये । इवन कुण्डों के बाहरी ओर तीन तीन कटिनियों नीचे स ऊपर को ५, ४, ३ अंगुल चौड़ी ऊँचो बनानी चाहिये । कुण्ड के भीतरी भाग की दीवारों को बराबर रखना चाहिये । प्रत्येक कुण्ड के अन्तराल में चार चार अंगुल का स्थान छोड़ देना चाहिये ।

कुण्ड के चारों किनारों पर प्रत्येक कटिनी में सूत्र वेष्टन क लिये मत्थोदार पतली खूटियाँ बनते समय ही लगा देना चाहिये ।

कुण्ड की रचना करते समय रोली से उसे रंग देना आवश्यक है । बाद में दिग्पालों के स्थापनार्थ एक एक दिशाओं और विदिशाओं में अक्षत के और पुष्पों के पुज रख कर उनके ऊपर एक एक सुपारी रख देना चाहिये । बाद में तीन बार सूत्र वेष्टन कर देना चाहिये । कुण्ड के चारों किनारों पर अक्षत के पुज बना कर एक एक लघुकलश सर्वोपधि मिश्रित जल से मरा हुआ, केशरिया वस्त्र से आवृत्त कर स्वस्तिक, पुष्प, सुपारी से सुशोभित कर रखना चाहिये । कुण्ड के चारों किनारों पर क्षीप और धूपदान का रखना भी आवश्यक है ।

नोट—यदि वेदी पर तीन कुण्डों के बनाने का योग

की ध्वनि के साथ कुटुम्बीजन तथा अन्य सम्बन्धियों के सहित घरात लेकर कन्या के घर के लिये रवाना हो जाय ।

अलूफा

जिस समय घरात कन्या के घर पर आती है उस समय कन्या पक्ष बालों को तोरण के पूर्व, तोरण निमग्नण के लिये यह कार्य करना चाहिये । घरात के आने पर कन्या का पिता और अन्य कुटुम्बीजन गाजे बाने के साथ घरात निवास-स्थान (अनियासा) पर जावे साथ में लिये हुए मंगलसूचक सामिमी मिष्ठान्न, व्यजन और कलश को तिलक मंत्र से सुवासी द्वारा तिलक कराकर घर की भेंट करें । इस समय कन्यापक्षीय सज्जन, वरपक्ष बालों से अति नम्र शब्दों में अति हृष के साथ तोरण के लिये पधारने के लिये निवेदन करें ।

नोट—इस समय दोनों ही पक्ष बालों को चाहिये कि वे आपसमें एक दूसरे का ताम्बूल, सुपारी आदि द्वारा सत्कार करें । प्रचलित प्रथा के अनुसार कन्या का पिता घर के पिता को भेंट दे ।

नोट—तिलक मंत्र = मंगलं भगवान् धीरो, मंगल गीतमोगणी ।
मंगलं कुन्दकुन्दायो, जैन धर्मोस्तु मंगल ॥

तोरण विधान

तोरण विधान का अर्थ द्वार स्पर्श (दरवाजा छूना) है । इस कार्य को सुविधानुसार विवाह के एक दिन पूर्व या उसी दिन करना चाहिये । वर अपनी सज्जित घरात के साथ श्वसुर के गृह पर आवे और अनेक शुभ वचनबारादि से सुशीभित घर के द्वार के मध्य में लगे हुए मंगलमय तोरण का स्पर्श करे ।

इसके बाद वस्त्रालंकार से भूषित, हर्षोल्लास में पूरित होकर वर की सास वर के ऊपर अक्षत और पुष्प की अञ्जलि चेषण करे और पुष्पाक्षत, दूर्वा, रत्न, दीप आदि आरते के थाल में रख कर वर का आरता चतारे और उसे भेंट देवे। इसी समय अन्य सभी स्त्रियाँ, जिनमें कन्या भी हों मंगलगान करती हुई वर को निरखे और आशीर्वादात्मक वर के मस्तक के ऊपर लीलों तथा पुष्पाक्षतों की वर्षा करे। कन्या का पिता आये हुए सज्जन वरातियों का पान, फूलमाला आदि से सत्कार करे। बाद में वर और वरातीजन पूर्ववत् गाजे-बाजे के साथ अपने निवास स्थान पर आ जावें। वरात के लौटते समय कन्या पक्ष वाले कुछ दूर तक उन्हें पहुँचाने जावें।

घर-आगमन

पाणिप्रदण के निश्चय किये हुए शुभ मुहूर्त से कुछ समय पूर्व चबटन आदि से स्नान करा कर वस्त्रालंकारों से अलंकृत हो कर वर गाजे बाने के साथ सवारा में बैठ कर श्रीजिन मन्दिर दर्शनार्थ जावे और दिनपूर्वक श्रीकृष्ण चढ़ावे, भेंट देवे और बाद में श्वसुर-गृह के लिये प्रस्थान करे।

घर को आता हुआ जान कर कन्या की माता सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ उत्साहसहित शीघ्र वर के सम्मुख आकर और उसके पाद प्रक्षालन कर आरता चतारे, शक्ति के अनुसार वर को भेंट देवे और वर को घर में प्रवेश करा कर विवाह-मंडप में उक्त स्थान पर बैठा देवे।

इस समय के पूर्व कन्या को स्नान आदि करा कर घर पक्ष से आये हुए स्त्रियों से सुमञ्जित कर ले

रखना चाहिये । पीछे कन्या का मामा घर को विवाह वेदी पर यथास्थान बैठाने तथा कन्या को भी लाकर घर के दक्षिण भाग में बैठा देवे ।

विवाह-विधान

विवाह का अर्थ पाणिप्रदण या फेरा है, यह अत्यन्त शुद्ध और महत्त्वपूर्ण कार्य है, इसलिये इसके सम्पादन करने का सुहूर्त लग्न आदि सुखवा लेना अत्यावश्यक है ।

परिशिष्ट में बताई गई विधि के अनुसार मंगल-कलश तैयार कर विनायक के दिन लिखे मन्त्र का उच्चारण कर वेदी के भाग इसे विराजमान कर देना चाहिये ।

रक्षावन्धन मंत्र

ॐ एमो अरहताण रक्ष रक्ष स्वाहा ।

यह मन्त्र बोल कर गृहस्थाचार्य मंगलमूत्र वर कन्या के हाथ में बांध देवे ।

दीपमज्जालन मंत्र

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहर दीपक सस्यापियामि स्वाहा ।

यह मन्त्र बोल कर दीपक स्थापित करे ।

तिलक मंत्र

मगल मगवानवीरो, मगल गौतमागणी ।

मगल कुन्दकुन्दाघो, जैनधर्मोस्तु मगल ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रीं ह्रः अ सि आ उसा अस्यसर्वाङ्ग
 वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

यह मन्त्र बोल कर गृहस्थाचार्य घर और कन्या के तिलक करे ।

परिणयन वाक्य

इसके उपरान्त घर कन्या श्रीसिद्धयन्त्रराज, शास्त्र आदि जो वेदिका में विराजमान हैं उन्हें नमस्कार करें और सुख-प्राप्ति के लिये घर-कन्या परम्पर में मुख्यावलोकन कर कन्या घर के गले में पुष्पमाला पहनावे । ❀

इसके बाद प्रथम कन्या का मामा और पीछे पिता और कुटुम्बीजन घर से कहें कि हम यह कन्या आपको सेवा के लिये प्रदान करते हैं, आप इसे स्वीकार करें। इसके उत्तर में घर कहे 'गृणोऽहं' अर्थात् मुझे स्वीकार है। पीछे कन्या का पिता कहे कि 'इसका धर्म से पालन करना'। इसके उत्तर में घर श्रीसिद्धयन्त्र को नमस्कार कर कहे कि "मैं धर्म, अर्थ और काम से पालन करूंगा।"

संकल्पधारा

कन्या का पिता घर के हाथ पर बारीक जल की धारा सक्कपमन्त्र के उच्चारणपूर्वक देवे ।

स्वस्तिश्री यजमानाचार्य प्रभृति भव्यजनानां सद्धर्मश्री
 वल्लायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु, अद्यभगवतो महापुरुषस्य

❀ नोट—इस समय यदि आवश्यक हो तो वेदिका के चारों ओर आवश्यक कर लेना चाहिये ।

श्रीमदादिब्रह्मणोमते मध्यमलोके जम्बूद्वीपवसितद्वीप
 मेरोर्दक्षिणे भारतवर्षे आर्यस्वर्गटे मतिपन्न विनय
 जनताभिसमे अत्र नाम्निनगरे मदीय दृश्यै एतद्
 वसर्दिणी कालावसानप्रवर्तमान कलिद्युगाभिधान पञ्चमकाले
 प्रथमपात्रे महति महावीरतीर्थकराष्ट्रिष्ट सद्धर्मव्यतिहरे श्री
 गौतमस्वामिप्रतिपादित सन्मार्गप्रवर्तमाने श्रेणिकमहाराज
 मण्डलेश्वर समाचरितमन्मार्गविशेषे वि० स०
 प्रवर्तमाने सच्चरायणे महाभगवत्मासे पक्षे शुभ
 तिथौवासरे नक्षत्रे शुभलग्नऽष्टमहाभगलद्रव्य
 शोभित श्रीयत्रराजसन्निधौ, शारदासन्निधौ, परमधार्मिक
 जनता विद्वत्समाजसन्निधौ, अस्मिन् महाभगलमयस्वात्म
 विवाहीत्सये अह नामा वशोद्धवां
 गोत्रजां श्री श्रेष्ठिन पौत्र्यां श्री श्रेष्ठिन,
 पौत्र्यां मम पुत्र्यां नाम्नीं इमां कन्यां
 वशोद्धवाय गोत्रजाय अस्य
 पौत्र्याय अस्य पौत्र्याय अस्य पुत्राय
 श्री चिरजीविने नामध्येयाय अस्मै
 वराय कुमाराय समन्वक्ष्यमाण, सुगन्ध जलधारापातन
 पूर्वक ददामि भूर्त्तुं हर्त्तुं ह स स्वाहा ।

इस प्रकार सुगन्ध जल की सकल्पधारापूर्वक कन्या का
 पिता कन्या को प्रदान करे और उपस्थित सौभाग्यवती स्त्रियां वर
 कन्या के मस्तक पर मंगलरूप अक्षतों का चेषण करें ।

देव शास्त्र गुरु पूजा

ॐ नम नम नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु एषा
 अरहताण, एषो सिद्धाण, एषो आयरियाण, एषो उ-
 ञ्कायाण, एषो लोए सब्ब साहुण । ॐ अनादि मूल-
 पत्रेभ्यो नमः [पुष्पाजलि क्षेपण करना] चत्तारिमगल, अर-
 हतमगल, सिद्धमंगलं, साहुमगल, केवल्लि पएणत्तो धम्मो-
 मगलं चत्तारि लोगुत्तमा, अरहतलोगुत्तमा, सिद्धलागुत्तमा,
 साहुलोगुत्तमा, केवल्लिपएणत्तो धम्मोलोगुत्तमा । चत्तारि
 शरण पव्वज्जामि अरहतशरण पव्वज्जामि, सिद्धशरण
 पव्वज्जामि साहु शरण पव्वज्जामि, केवल्लि पएणत्ता
 धम्मोशरण पव्वज्जामि । ॐ नमो अर्हते स्वाहा ।

(यहाँ पुष्पाजलि क्षेपण करना चाहिये ।)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा ।
 ध्यायेत्पञ्चनमस्कार सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥१॥
 अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्था गतोऽपि वा ।
 यः स्मरेत्परमात्मान स वाङ्माभ्यन्तरे शुचिः ॥२॥
 अपराजितमत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशनः ।
 मगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गल मतः ॥३॥
 एषो पंचणमोयारो सब्बपावप्पणासणो ।
 मगलाण च सब्बेसि होइ मगल ॥४॥

अहमित्यक्षर ब्रह्मवाचक परमेष्ठिन' ।

सिद्ध चक्रस्य सद्बीज सर्वत प्रणमाम्यह ॥५॥

कर्माष्टकविनिर्मुक्त माक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।

सम्पत्त्वादिगुणोपेत सिद्धचक्र नमाम्यह ॥६॥

(यहाँ पुष्पाञ्जलि स्नेहण करना चाहिये ।)

यदि अक्षरकाश ही तो सदस्यनाम पदकर दश अक्षर्य चढ़ाने चाहिएँ या नीचे लिखा हुआ एक श्लोक पदकर अक्षर्य चढ़ाना चाहिएँ)

शुद्धचन्दनतदुलपुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपफनार्घ्यैः ।

धवलमगलगानरवाकुलं जिनगृहे जिननाथ मह यजे ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनसदस्यनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीतिम्बाहा ॥

श्रीमज्जिने द्रमभिवन्द्य जगत्प्रवेश

स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयाहम् ।

श्रीमूलसधसुदृशां सुकृतैकहेतु

जनेन्द्रपङ्कविधिरेषमयाभ्यघाधि ॥८॥

स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय

स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय ।

स्वस्ति प्रकाशसङ्गोर्जितदृढमयाय

स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत वैभवाय ॥९॥

स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय

स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय ।

त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय

त्रिकालसफलायतविस्तृताय ॥१०॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिक्रामधिगन्तुकामः ।
आलम्बनानि विविधान्यवलाभ्य वलग्न
भूतार्थयज्ञपुष्टयस्य करोमि यज्ञम् ॥११॥
अर्हत्पुराणपुषोत्तमपावनानि
वस्तून्यनूनमस्त्रिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् स्वलद्विमलकेवलशायरहो
पुष्टय समग्रप्रशमेकमना जुशोमि ॥१२॥

(यहा पुष्पाञ्जलि शेषतः क्यता)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री समवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अमिनन्दनः ॥
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चद्रमयः ।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शोभनः ॥
श्री श्रयान्स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपुत्र्यः ।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः ।
श्री कुपुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनायः ॥
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिमुव्रतः ।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री
श्री पार्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री

नित्याप्रकम्पाद्भुत खेवलौघा* स्फुरन्मन* पर्यय शुद्ध
 रोया । दिव्याग्निज्ञानबलप्रबोधा* स्वस्ति
 क्रियासु परमर्पयो न ॥१॥

[आगे प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए]

काष्ठस्यधान्यापममेकबीज सभिन्नसश्चातृपदानुसारि ।
 चतुर्विध बुद्धिबलदधाना* स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥२॥

सस्पर्शन सश्रवण च दूरादास्त्रादनाघ्राणविलोकनानि ।
 दिव्यान्मनिज्ञानबलाद्ब्रह्म* स्वस्ति क्रियासु* परमर्पया
 न ॥३॥

प्रज्ञापधाना* श्रमणा समृद्धा मत्येकजुध्या दशसर्व-
 पूर्ण । मन्त्रादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु*
 परमर्पयो न* ॥४॥

जघाबलिश्रणिकनाम्बुतन्तुप्रसूनबीजांकुरचारणहा ।
 नमोऽङ्गणस्त्रैरिहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्पयो नः ॥५॥

अणिम्नि दक्षा* कुराला महिम्नि लघिम्नि शक्ता*
 कृतिनो गरिम्नि । मन्त्रापुराबलिनश्च नित्यं स्वस्ति
 पु परमर्पयो न ॥६॥

सकामरूपित्ववशित्वमैश्वर्यं प्राकाम्य मन्तद्धिमथासि-
माप्ताः । तथाऽप्रतीघातगुणमघाना, स्वस्ति क्रियासुः पर-
मर्षयो नः ॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोद्यं घोरं तपो घोरं पराक्र-
मस्याः । ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासुः पर-
मर्षयो नः ॥८॥

आमर्षसर्वोपधयस्तथाशीविपविपादृष्टिं विपविपाश्च ।
सखिच्छविदजल्लुमर्लोपधीशा, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो
नः ॥९॥

क्षीरं स्रवतोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं
स्रवन्तः । अक्षीणसवासमद्दानसाश्च स्वस्ति क्रियासुः
परमपया नः ॥१०॥

(इति स्वस्ति मंगलविधानं ।)

सर्वं सर्वज्ञनाथं सकलतनुमृतां पापं सन्तापहर्ता ।
त्रैलोक्याक्रान्तकीर्तिः क्षतमदनरिपुर्घातिकर्ममणाशः ॥
श्रीमन्निर्माणसम्पद्वरयुवनिकरालीढकण्ठैः सुकण्ठैर्द्वेन्द्रैर्वन्द्य-
पादो जयति जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूजः ॥१॥

जय जय जय श्रीसत्कान्तिप्रभो जगतां पते । जय
जय भवानेव स्वामी भवाम्भसि मञ्जताम् ॥ जय जय
महामोहध्वान्तप्रभात कृतऽर्चनम् । जय जय जिनेश त्व
नाय प्रसीद करोम्यहम् ॥२॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवीपट् (इत्याद्यातनं)
ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इति स्थापनं)
ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव षपट्
(इति सन्निधिकरण)

देवि ! श्रीश्रुतिदेवते ! भगवति ! त्वत्पादपङ्कज
द्वन्द्वेयापि शिलीमुखत्वमपर भक्त्या मया माध्यते ।
मातश्चेतसि तिष्ठमे जिनमुखोद्भूते सदा ग्राहि मां,
हृद्दानेनमयि प्रसीद भवति सम्पूजयामोऽधुना ॥३॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान अत्र अवतर अवतर
संवीपट् ।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव
भव षपट् ।

सपूजयामि पूज्यस्व पादपद्मयुग गुरो ।

तपःप्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मनः ॥४॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह अत्र अवतर २ संवीपट् ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह अत्र तिष्ठ २ ठ ठ ।

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव
भव षपट् ।

देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवन्यान् शुष्मत्पदान शोभितसार-
वर्णान् । दुग्धान्धिसंस्पर्धिगुणैर्जलीयैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन्
यजेऽहम् ।१॥

ॐ ह्रीं परमह्वयेऽभनतान्तज्ञानराक्षये अष्टादशशेपरहिताव
पञ्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं जिनमुद्योद्भूत स्याद्वादनयगर्भिनद्वादशाङ्गं श्रुत
ज्ञानाय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारिभ्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्याय
सर्वसाधुभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्ति समस्तसत्त्वाहितहारिवाक्यान् ।
श्रीचन्द्रनैर्गंधविलुब्धभृङ्गैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीनयजेऽहम् ।२॥

ॐ ह्रीं परमह्वये अर्हत्परमेष्ठिने संसात्तावविनाशनाय चन्दनं
निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्य चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अपारससारमहासमुद्रप्रोत्तारणेपाण्ड्यतरीन् सुभक्त्या ।
दीर्घाक्षतांगैर्घञ्जाक्षतीयैर्जिनन्द्रसिद्धान्त यतीन् यजेऽहम् ।३॥

ॐ ह्रीं परमह्वये अर्हत्परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्
निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

विनीतभव्याब्जविषोधसूर्यान्वर्यान् सुचर्याकथनैकधुर्ग्यान् ।
कुन्दारविदप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने कामबाणविध्वशनाय पुष्पं निर्वपामीति
स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुन्दर्पकुन्दर्पविसर्पसर्पप्रसन्ननिर्णागनर्नतेयान् ।
प्राज्याज्यसारैश्चरुभीरसाह्यैर्जिनन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने सुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति
स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्वस्तोद्यमांधोकृतविश्वविश्वमोहांधकारप्रतिघातदीपान् ।
दीपैः कनत्काञ्चनभाजनस्यैर्जिनन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजे
ऽहम् ॥६॥

ॐ ह्रीं परमद्वारे अर्हत्परमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय दीप निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुष्टाष्टकर्मन्धनपुष्टनालसधूपने भासुरधूमफेतून् ।

गुणैर्विद्यूतान्यसुगधगर्भैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥७॥

ॐ ह्रीं परब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसाम्गम्यान् कुवादिवादास्खलित-
प्रभावान् । फलैरल्ल मोक्षफलाभिसारैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन्
यजेऽहम् ॥८॥

ॐ ह्रीं परब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय फल निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सद्धारिगधाक्षतपुष्पजातैर्नैवेद्यदीपामलैः धूपधूमैः ।
फलैर्विचित्रैर्घनपुण्ययोग्यान् जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन्
यजेऽहम् ॥९॥

ॐ ह्रीं परब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय अर्घं नियमामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो अर्घं नियमामीति स्वाहा ।

ये पूर्वां जिननायशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते ।

श्रमन्त्य सुविचित्रकाव्यरचनागुञ्जारण्यतो नराः ॥

पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूत्या तपाभूपणा-

स्नेहव्या, सङ्गलावशोधरचिरांसिद्धिर्नर्पते पराम् ॥१०॥

इत्यारोषां (पुष्पाञ्जलि सेवण करना)

वृषभोऽमितनामा च समवश्चामिनदन ।

सुपति पद्मामशर सुपार्श्वो जिनमत्तमः ॥ १ ॥

चन्द्राभ' पुष्पदन्तश्च शीतलो मगरानमुनि' ।

श्रेयाश्च वासुपूज्यश्च विमला विमलद्युति ॥२॥

अनन्ता धर्मनामा च शान्ति कुशुर्जिनोत्तमः ।

अरश्च मल्लिननायश्च सुव्रतो नमितोर्यकुन् ॥३॥

हरिवश ममुत्भूतोऽग्निष्टनेमिर्जिनश्वर' ।

ध्वस्तोपमगदैत्परि पार्श्वो नागन्द्र पूजितः ॥४॥

कर्मन्तिष्ठन्महावीर सिद्धार्यकुलसम्भव' ।

पते सुरासुरीघेण पूजिता विमलरिव ॥५॥

पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूतिभूरिभिः ।

चतुर्विधस्य सवस्य शान्ति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥६॥

भिने भक्तिर्भिने भक्तिर्भिने भक्तिः सदाऽस्तु मे ।
सम्यक्त्वमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥७॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदाऽस्तु मे ।
सद्ब्रह्मानमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥ ८ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

गुरोर्भक्तिर्गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्ति सदाऽस्तु मे ।
चारित्र्यमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥ ९ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ देवजयमाला प्राकृत ।

वसाणुद्राणे जणधणुदाणे पशुपोसिब तुहुत्तघरु ।
तुहु चरणविहाणे केवलणणे तुहु परमप्यठ परमगुरु ॥ १ ॥
जय रिसह रिसीसर लमियपाय । जय अजिय जियंमरोसराय ।
जय संभव संभवकयबिओय । जय अहिणंदण र्णदियुपओय ॥२॥
जय सुमइ सुमइ सम्मयपयास । जय परमप्यह परमाणिवास ।
जय जयहि सुपास सुपासगत्त । जय च्चदप्यह च्चदाहवत्त ॥ ३ ॥
जय पुत्कयंत दंतैतरग । जय सीयल सीयलवयणमंग ।
जय सेय सेयकिरणोदसुज्ज । जय वासुपुज्ज पुज्जाणपुज्ज ॥ ४ ॥
जय विमल विमल गुण सेठिठाण । जय जयहि अणंठाणंथणाण ।
जय पम्म भम्मतिरथयर संत । जय साति सांति बिहियायवत्त ॥५॥

जय कु कु कु शुबहुअगिसदय । जय अर अर भाहर विहियसमय ।
 जय मल्लिमल्लिआदामगघ । जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिउंघ ॥६॥
 जय णमि णमियामरणियरसामि । जय खेमि घम्मरहचक्खणेमि ।
 नय पास पासद्धिदणक्किवाण । जय धट्टमाण जसवट्टमाण ॥७॥

घत्ता ।

इह जाणिय णामहिं, दुरियविरामहिं, परहिविणमिय सुरावल्लहिं ।
 अणअणहिं अणाइहिं, समयकुवाइहिं, पणविमि अरहंतावल्लिहिं ॥८॥
 ॐ ह्रीं वृषमादिमहागीरान्तेभ्योऽर्घ्यं महाघैर्निर्वपामिति स्वाहा ॥९॥

अथ शास्त्रजयमाला प्राकृत ।

सपइ सुहकारण, कम्मवियारण, भवसमुदतारणतरण ।
 जिणुवाणि खमसममि, सत्तपयस्समि सग्गमोक्कपसगमकरणं ॥
 जिणुवमुहाउ विणगयतार । गण्हिदविगुफिय गंयपयार ।
 तिलोयहि मढण धम्मद खणि । सया पणमामि जिण्हिदह वाणि ॥
 अवग्गहईइ अवायजुपहि । सुधारणभेयहि तिण्हिसपहि ॥
 मइ छत्तोस बहुप्पमुहाणि । सयापणमामि जिण्हिदह वाणि ॥
 सुदं पुण दोण्हिण अणोयपयार । सुवारहभेय जगत्तयसार ।
 सुरिदणरिदसमधिओ जाणि । सया पणमामि जिण्हिदह वाणि ॥
 जिण्हिदगण्हिदणरिदह रिद्धि । पयासइ पुण्णपुराकिउल्लद्धि ।
 णिउग्गु पहिरुल्लउ पहु वियाणि । सयापणमामि जिण्हिदह वाणि ॥
 जुल्लोयअल्लोयह जुत्ति जणोइ । जुत्तिण्हि विक्काअसरुव भणोइ ।
 अवरगहल्लक्खण दुल्लउजाणि । सय पणमामि जिण्हिदह वाणि ॥
 जिण्हिदवरित्तविअत्त मुणोइ । सुमावयघम्महिं जुत्ति जणोइ ।
 णिउग्गुवितिअउ इत्थु वियाणि । सया पणमामि जिण्हिदह वाणि ॥
 सुजोवअल्लोवह वरुवह चक्खु । सुपुण्हि विपाव विवध विमुक्खु ।
 अरुत्थुण्हिउग्गु विभासिय णाणि । भया पणमामि जिण्हिदह वाणि ॥

विमेशहि श्रोहि विणाय विचित्तु । चउत्थु रिजोवित्तमइ चत्तु ।
 सुखाइय केवलणाय विद्याणि । सयापणमामि जिण्णिदह वाणि ॥
 जिण्णिदह णाणु जगत्तयभाणु । महातमणासिय सुक्खणिहाणु ।
 पयश्चहु भत्ति भरेण विद्याणि । सया पणमामि जिण्णिदह वाणि ॥
 पयाणि सुवारहकोटिमयेण । सुलक्खणतिरासिय जुत्ति भरेण ।
 सहस्रअठ्ठावण पच विद्याणि । सया पणमामि जिण्णिदह वाणि ॥
 इकावण कोटिउ लक्ख अठ्ठेय । सहस चुलसोदिसया छक्केव ।
 सदाइगबोसह राथपयाणि । सया पणमामि जिण्णिदह वाणि ॥

पचा ।

इह जिण्णवर वाणिय विसुद्धमइ । जो भवियण णियमण धरइ ।
 सो मुरण्णिद सपय लहिवि । केवलणाय विउत्तरइ ॥

ॐ ह्यो श्रीजिनमुद्रोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वाक्षरागश्रुतज्ञानाय
 अर्घ्यं निर्बेणामोति स्वाहा ।

अथ गुरु जयमाला प्राकृत ।

भविषह भवनारण, मोक्षह कारण, अज्वि तित्थवरत्तणह ।
 तव कम्म असगह दय घम्मंगह पालवि पंच मइअवयह ॥ १ ॥
 बंधानि महारिसि सीलवत, पंचेदिय सजम जोग जुत्त ।
 जे ग्यारह अगह अणुमरति, जे चउदहपुव्वह मुणि थुणति ॥ २ ॥
 वादाणु नारवर कुट्टबुद्धि, उप्पणणगाहआयासरिद्धि ।
 जे पाणाहारी तोरणीय, जे रुक्खमूज आतावणीय ॥ ३ ॥

जे भोगिधाय चंदाहणीय, जे अत्यत्यवणि णिवामणीय ।
 जे पंचमहव्वय धरणधीर, जे समिदिगुप्ति पालणहि वीर ॥ ४ ॥
 जे बट्टहि देह विरत्तचित्त, जे रायरोसभयमोहवत्त ।
 जे कुगइहि सवरु विगयसोह, जे दुबियविणामण कामकोह ॥ ५ ॥
 जे जल्लमल्लतिणत्तिचगत्त, आरम्भ परिगह जे विरत्त ।
 जे तिण्णकाल बाहर गमति, छट्टट्टम दसमउ तउवरति ॥ ६ ॥
 जे इक्कमास दुइगास लिति, जे गारसभोयण रइ करति ।
 ते मुणिवर वदउं ठियमसाण, जे कम्म ढहइ वरसुक्कमाण ॥
 बारहबिह सत्तम जे धरति, जे चारिठ विक्कहा परहरति ।
 बावीस परीसह जे सटंति, ससार मइण्णउ ते तरति ॥ ८ ॥
 जे घम्ममुद्धि महियलि थुणति, जे काठसग्गो णिस गमंति ।
 जे सिद्धविलासणि अदिससति, जे पक्कमास आहार लिति ॥ ९ ॥
 गोदुहण जे वीरासणीय, जे घणुह सेज वज्जासणीय ।
 जे सववलेण आयास जति, जे गिरिगुहवंदर विवर थंति ॥ १० ॥
 जे सत्तुमित्त समभावचित्त, ते मुणिवर वंदउं दिदुचरित्त ।
 चौबीसह गंधह जे विरत्त, ते मुणिवर वंदउं जग पबित्त ॥ ११ ॥
 जे सुक्काणिग्गा एकचित्त, वदामि महारिसि मोखवत्थ ।
 रयणत्तयरजिय मुद्धभाव, ते मुणिवर वंदउ ठिदिसहाव ॥ १२ ॥

घत्ता ।

जे तपसूरा, सजमपोरा, सिद्धवधूअणुराइया ।
 रयणत्तयरजिय, कम्मह गंजिय, ते रिसिवर मइ माईया ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानधारिजादिगुणविराजमानाचार्योपा
 ध्योयसर्वसाधुभ्यो महार्घं निवपामीति स्वाहा ॥

अथ सिद्धपूजा ।

ऊर्ध्वाधोरयुतं सविन्दुमपरं ब्रह्मस्वरावेष्टित
 वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संथितत्वान्वितम् ।
 अन्तःपत्रतटेष्चनाहतयुत ह्रींकार सवेष्टितं
 देव ध्यायति यः स मुक्तिमुभयो वैतीपद्मद्वारवः ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते । सिद्धपरमेष्ठिन् भव भवतः
 भवतः संबीपट् ।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते । सिद्धपरमेष्ठिन् कश्चि २ ठ ठ ।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते । सिद्धपरमेष्ठिन् मन सन्नि-
 दितो भव भव वपट् ।

निरस्तकर्मसम्बन्ध सूक्ष्मं नित्यं निष्कम् ।
 वन्देऽहपरमात्मानममूर्त्तमनुपदत्तम् ॥

(सिद्धयन्त्र की स्थापना)

१६नाथ

सिद्धी निवासमनुग परमात्मकं
 हीनादिभावरहित भवश्रीदम् ।
 रेवापगावरसरो-यमुनद्र शर्त
 नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धिदा ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिप
 नाथ जल निर्वपामी

व प्राप्तये

आनन्दकन्दजनक घनकर्ममुक्त
सम्यक्त्वशर्मगरिम जननार्तिशीतम् ।
सौरभ्यवासितशुभ्र हरिचन्दनाना
गन्धैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने समारता
विनाशनाय चन्दन निवषामाति स्वाहा ॥ २ ॥

सर्वांगगहनगुण सुममाधिनिष्ठ
सिद्ध स्वरूपनिपुण कमल विशालम् ।
सौगध्यशालिवनशालिवराक्षताना
पुष्पैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपद्प्राप्तये
अक्षतान् निर्वषामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

नित्य स्वदेहपरिमाणमनादिसङ्ग
द्रव्यानपेक्षममृत मरणाद्यतीतम् ।
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्य स
नाय पुष्प निर्वषामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

ऊर्ध्वस्वभावगमन सुमनोव्यपेत
ब्रह्मादिबीजसहित गगनाधभासम् ।

क्षीरान्नसाउययटकै रसपूर्णगर्भै-
निरय यजे चक्रवर्त्तरसिद्धचक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुद्रोगविध्वंसनाय
नेत्रेण निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

आतङ्कशोकमयरोगमदप्रशान्त
निर्द्वन्द्वभावघरण महिमानिवेशम् ।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै-
र्दीपैर्यजे रुचिवर्त्तरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविना
शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

पश्यन्समस्तभुवन युगपन्नितान्त
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ।
सद्द्रव्यगन्धघनसारत्रिमिथितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै-
र्घ्येष शिवं सफलभण्डजनः सुबन्धम् ।
नारिङ्गपूगकदलीफलनारिकेलै
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अद्विक्त उन्द ।

अविनाशी अचिकार परमरसधाम हो ।
 समाधान सर्वज्ञ महज अभिराम हो ॥
 शुद्धपोष अविच्छिन्न अनादि अनन्त हो ।
 जगतशिरोमणि सिद्ध सदा जयवत हो ॥१॥
 ध्यानअग्निकर कर्म फलरू सबै दहे ।
 नित्य निरजनद्वय सरूपी हो रहे ॥
 ज्ञायकके आकार ममत्वनिवारिके ।
 सो परमात्म सिद्ध नमू सिर नायके ॥२॥

दोहा ।

अविचलज्ञानप्रकाशते, गुण अन्त की खान ।
 ध्यान परै सों पाइये, परमसिद्ध भगवान ॥३॥

इत्याशीर्वाद् (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चित्र प्रक्षालनम्) ।

नीचे लिखे मात्र को पढ़ कर यन्त्र का अभिषेक करे —

ॐ भूर्भुव स्वः । इह पतद्विष्णोष वारक यत्रमह
 परिषिञ्चकामि ।

(अथ स्थापना)

नीचे जिले श्लोक और तीन मन्त्र पढ़कर यन्त्र की स्थापना करे।

परमेष्ठिन् जगत्त्राण करणं मङ्गलोत्तम ।

शरणा इह तिष्ठतमेसन्निहितोऽस्तुपावनाः ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् असिआवसा मंगलोत्तमशरणभूता अत्रा
वरावतर संबोपट् आह्वानन । ॐ ह्रीं अर्हन् असिआवसा
मंगलोत्तम शरणभूता तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम् ॥ ह्रीं अर्हन्
असिआवसा मंगलोत्तमशरणभूता अत्र ममसन्निहितो भव २
पट् सन्निधापनम् ॥

षकेरुहापातपरागपुंजसौगन्ध्यमद्भिः सलिलैः पवित्रैः ।

अर्हत्पदाभाषित मगलादीन् प्रत्पूहनाशार्थं मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो जलं
निर्वपामोति स्वाहा ।

काश्मीरकर्पूरकृतद्रवेण, ससारतापापहृतौयुतेन ।

अर्हत्पदाभाषित मगलादीन् प्रत्पूहनाशार्थं मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो सुगन्धं
निर्वपामोति स्वाहा ॥

शाल्यसतैरसतमूर्तिमद्भिरब्जादियासेन सुगन्धिमद्भिः

अर्हत्पदाभाषित मगलादीन् प्रत्पूहनाशार्थं मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यः अष्टतं
निर्वपामोति स्वाहा ॥

कदम्बजात्यादिभ्यै सुरद्रुमैर्जातैर्मतोजातत्रिपाशदसैः ।

अर्हत्पदाभाषितमगलादीन् प्रत्युहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो पुष्पम्
निर्वपामीति स्वाहा ॥

पीयूषपिण्डश्चणशाककाति-

स्पर्शद्विरिष्टैर्नयनमियैश्च ।

अर्हत्पदाभाषित मगलादीन्-

प्रत्युहनाशार्थ मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो नैवेद्य
निर्वपामीति स्वाहा ॥

ध्वस्ताद्यकारमसरैः सुदापैर्घृतोद्भैरत्नविनिर्मितैर्वा ।

अर्हत्पदाभाषित मगलादीन् प्रत्युहनाशार्थ मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो दीपं
निर्वपामीति स्वाहा ॥

स्वकीय धूपेन नभोरकाश, व्यपद्भिर्दुर्घैश्च सुगन्धधूपैः ।

अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन् प्रत्युहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यो पंचपरमेष्ठिभ्यो धूपं निर्व
पामीति स्वाहा ।

नारगपूगादिफलैरनर्घ्यै-

हृन्मानसादिप्रियतर्पकैश्च ॥

अर्हत्पदाभाषित मगलादीन्,

प्रत्युहनाशार्थमह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो फलं निर्व
पामीति स्वाहा ।

श्रंपश्चंदननंदनाक्षततखट्टभूतैर्निषेद्यैर्वरैः ।
दीपैर्धूपफलोत्तमैः समुदितैरेभिः सुवर्णस्यतैः ॥

अर्हत्सिद्ध सुसूरिपाठकमुनीन्,
लोकोत्तमान्मंगलान् ।

प्रत्युद्दीघनवृत्तये शुभकृतः,
सेव्येशरण्यानहम् ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्य पञ्चपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ प्रत्येक पूजनम् ।

कल्याणपञ्चककुनोदयमाप्तमीश
महंतमच्युतचतुष्टयभासुरांगम् ।
स्याद्वादवागमृतसिन्धुगशांककोटि
मर्चे जलादिभिरनतगुणालयतम् ॥

ॐ ह्रीं अनन्तपतुष्टयसमवशरणदिलदमाविभ्रते अर्हत्पर-
मेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कर्मष्टिनेध्म च समुत्तमाशु हुत्वा ।
सद्दयानवह्निसरे स्वरयमात्मवन्तम् ॥
निश्रेयसामृतसरस्यथ सनिनाय ।
ससिद्ध मुच्च पदद परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणमरमोकृते सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ॥

स्वाचारपचकमपिस्वयमाचरति,
 द्याचारयति भविकान् निज शुद्धभाजः ॥
 तानर्चयामिविधिभिः सललादिभिश्च ॥
 मत्पूइनाशनविधौ निपुर्णान्परिभ्रैः ॥

ॐ ह्रीं पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अर्गागवाहपरिपाठन लालशाना ।
 मष्टागज्ञानपरिशीलनभाविनानाम् ॥
 पादारविन्द युगल खलुपाठकानां ।
 शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं द्वादशाग पठनपाठनोद्यताय उवाच्याय परमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

आराधनामुखविलासमहेश्वराणां ।
 सद्धर्मलक्षणमयात्मविकस्वराणां ॥
 स्तोतुगुणान् गिरिवनादिनिवासिनां वै ।
 एषोऽद्यतचरणपीठमृवनयामि ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशमकार चारिशाराधकसाधुपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्हन्मगलमर्चामि जगन्मगलदायकम् ।
 मारुच्यकर्मविघ्नौघमलपायपयोमुखम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चिदानन्दलसद्बीचि मालिन गुणशालिनम् ।
सिद्धमंगलमर्चेह सलिलादिभिरुज्वलैः ॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुष्टिक्रियारसतपोत्रिक्रियौपधिमुख्यकाः ।
ऋद्धयोऽप्य नमोहन्ति साधुमंगलमर्चये ।

ॐ ह्रीं साधुमंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

लोकालोक स्वरूप च प्रज्ञप्त धर्म मंगलम् ।
अर्चेवादित्रनिर्घोषगीतनृत्यैः वनादिभिः ॥

ॐ ह्रीं केवल प्रज्ञप्तधर्ममंगलाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

लोकोत्तमोऽहं जगतां मयवाधाविनाशकः ।
अर्च्यतेऽर्घ्येण समर्थां कुकर्मगणहानये ॥

ॐ ह्रीं अहं लोकोत्तमार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

विश्वाग्रशिखर स्थायी सिद्धालोकोत्तममया ।
महते महसामदचिदानन्द मुपेदुराः ॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

रागद्वेषपरित्यागी साम्य भाग्यवीचकः ।
साधुलोकात्तर्पण पूज्यते सलिलासतैः ॥

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्घपामीति स्वाहा ॥

सुखमसमया भास्वान् सधर्मो विष्टपोत्तमः ।
अनतसुखसस्याने यज्यतेऽभोऽसतादिभिः ।

ॐ ह्रीं केवलिमहाधर्मलोकोत्तमाय अर्घ्यं निर्घपामीति स्वाहा ॥

सदाहन् शरण मये नान्यथा शरणं मम ।
इति भाव विशुद्धयर्थमर्हयामि जनादिभिः ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय अर्घ्यं निर्घपामीति स्वाहा ॥

ब्रजामि सिद्धशरण परावर्तनपत्रक ।
मित्वा स्वसुखसदोऽसपन्नमिति पूजये ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय अर्घ्यं निर्घपामीति स्वाहा ॥

आथये साधुशरण सिद्धान्त प्रतिपादनैः ।

० न्यत्वकृताज्ञानतिमिरमिति शुद्ध्यायजापितं ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणाय अर्घ्यं निर्घपामीति स्वाहा ।

धर्म एव सदाबन्धुः स एव शरणं मम ।

इह वा यत्र ससारे इति त पूजये धुना ॥

ॐ ह्रीं धर्ममालाय अर्घ्यं निर्घपामीति स्वाहा ।

संसार दुःखहनने निपुण जनानां ।

नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशममाणम् ॥

सपूजये त्रिपिण्डभक्तिभरावनमः ।

शांतिपदं भुवनमुख्यपदार्यं सार्यं ॥

ॐ ह्रीं अर्द्धदादि सप्तदशमन्त्रेभ्य महार्घं निर्घपामीति श्लाघा ॥

(पुष्प चदाकर १० धार एमोकार मन्त्र पदे)

अथ जयमाला ।

विघ्नमणासनविधौ सुरमर्त्यनाया,

अग्रेसर जिन वदति भवतमिष्टम् ॥

अनाद्यन्त युगवर्तिनपत्रकार्ये,

गार्हस्थ्यधर्मविहितेऽहमपि स्मरामि ॥

गणानां मुनीनामधीशस्व तस्ते,

गणेशारूपया ये भवतस्तुवति ॥

पदा विघ्नसदोदशातिर्जनानां,

करे सल्लुट्पायतश्रेयसानाम् ॥

कृतेः प्रभावात्कलुषाण्यस्य,

जनेषु मिष्ट्यामदवासितेषु ॥

प्रवर्तितो-यो गणराजनाम्ना,
 लंबोदरो दतिमुखो गणेशः ॥

रुद्रेण कामज्ज्वलितेन गौर्या,
 विनोदभारान्मलमृत्सिपित्वा ॥

कृत्वापुराणप्रिति वाचयित्वा
 समगल त कथमुद्गिरन्ति ॥

पतस्त्वमेवासि विनायको मे,
 दृष्टेष्टयोगानवरुद्धमाप ॥

तन्नाममात्रेण परामचति,
 तिष्ठनारयस्तिर्हि किमत्रचित्रम् ॥

जय जय जिनराज त्वद् गुणान्कोव्यनक्ति,
 यदिसुरगुरुरिन्द्र कोटिर्घर्ममाण ॥
 घदितुमभिलषेद्वा पारमाप्नोति नो चेत्,
 कतिथ इह मनुष्यः स्त्रलपबुध्या समेतः ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मंत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्घवामीति स्वाहा ॥

त्रिय बुद्धिमनाकूल्य घर्ममीति विवर्धन,
 गृहि घर्मे स्थितिभूयात् श्रेयस मेदिशत्वरम् ॥

इत्याशीवाद ।

यहां का नवमहा अर्घ्य, लगी चिट पर बंदिये ।

नवदेव पूजा ।

(अथ नवग्रह अर्घ्यं)

सूर्यः शौर्यगुण शशी कुशलतां सन्मगल मंगलो ।
शुद्धिं तत्त्वगुणां बुधो धितरताञ्जीवः शुभोऽम्नीघनम् ॥
शुकः सुकलतर यशोतिविपुलं मंदोप्यमंदश्विरम् ।
राहुर्बाहुबल महाअर्घ्यमहितः केतुर्महीकेतुताम् ॥

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवा सर्वेषु यष्टु प्रभृतीना शान्तिं
कुरुत २ स्वाहा ।

पञ्चमनाथनवग्रहदेवा ।

दृग्वीर्या इव गाहनागुरुलघुपध्वस्तबाधदृष्टुरम् ॥
मजानामि यन्नामि सन्ततमपिध्यायामि गायामि तम् ।
सस्नीमि प्रणमामि यामि शरण सिद्ध विशुद्धं प्रभुम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसकलसर्वविमुक्ताय परममहापरमेश्वराय सिद्धपर
मेष्टिनेऽर्घ्यं निर्वपांमीति स्वाहा ॥

ध्याचारवत्वादिगुणाष्टकार्घ्यं ।

दशप्रकृष्टस्थितकल्पदीपम् ॥

द्विपटुतपःसदृशमात्तपदभि- ।

राशयैः सूरिमसु नमामः ॥

ॐ ह्रीं पट्टत्रिंशद्गुणान्वितश्रीमदाचार्यपरमेष्टिनेऽर्घ्यं

एकदशाङ्कचतुर्दशपूर्वसर्व- ।

सम्यक् श्रुते, पठनपाठनपाठनो य
कारण्य पुण्यसरिदुद्धममुद्रचित्तः ।

त पाठक मुनिमुदारगुण नमाय.

ॐ ह्रीं पचविंशतिगुणसमन्वितश्रीसदुपाध्यायपरमे
निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्नानभूषणनलोचविवेकतैक ।

भक्तोदभक्तरदघर्षणशुद्धवृत्तम् ॥

पचवृत्तोद्दसमितोद्दियरोघपट्स- ।

दावश्यकोत्तममर प्रणमामि साधु

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसमन्वितश्रीसाधुपरमेष्ठिने
मीति स्वाहा ।

अर्हद्भवत्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाग विजाल

चित्रं बहुर्ययुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं

मोसाग्रद्वारभूतं प्रतचरणफल ज्ञेयमावप्रदीप

भक्त्या नित्यप्रथं दे श्रुतमहमखिल

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुत्तोत्पन्नाये भ
मीति स्वाहा ।

धर्म, सर्वसुखाकरो हितफरो

धर्मैव समाप्यते शिव

धर्मान्नास्ति परस्सुहृद्भवभृता धर्मस्य मूल दया ।
धर्मे चिन्तमह दधे प्रतिदिन हे धर्म ! मां पालय ।

ॐ ह्रीं मर्द्धन्वातरागप्रणोतशारवतधर्माय अर्घं निर्घपा
मीति स्वाहा ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्य त्रिलोकीगतान् ।
वन्देभावनव्यन्तरद्युतिवरस्वर्गामरायासगान् ॥
सद्रगन्वाक्षत पुष्पचारुचरुमिर्दीपैश्च धूपैः फलैः ।
नीरात्रैश्च यजेणम्यगिग्सा दुष्कर्मणा शान्तये ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिधीजिनालयेभ्योऽर्घं निर्घपामीति स्वाहा ।

यावन्तिजिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सतत भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिभ्य श्रीवीतरागप्रतिविम्बेभ्योऽर्घं निर्घपा
मीति स्वाहा ।

सिद्धपूजा ।

स्थापना (इन्द्रपूजा)

सिद्धान् प्रसिद्धान् वसुकर्ममुक्तान् ।

त्रैलोक्यशीर्षे स्थितचिद्धिलासान् ॥

एकदशाङ्कचतुर्दशपूर्वसर्व- ।

सम्यक् श्रुते पठनपाठनपाठवो यः
काष्ठस्य पुण्यसरिदुद्धसमुद्रचित्तः ।

तं पाठक मुनिमुदारगुण नमाम ॥

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसमन्वितश्रीमदुपाध्यायपरमेष्ठिनेऽयं
निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्नानभूषणनलोचविचलतैः ।

भक्तोदयत्तरदघर्षणशुद्धवृत्तम् ॥

पचवृत्तोद्धममितीन्द्रियरोषघट्स ।

दाशयकोत्तमपर प्रणमामि साधुम् ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसमन्वितश्रीसाधुपरमेष्ठिनेऽयं निर्वपामीति
स्वाहा ।

अहंद्रवधत्रप्रसूतं गणपरचित्त द्वादशांग विशालम् ।

चित्र बहुर्ययुक्त मुनिगणवृषभैर्धारित बुद्धिमद्भिः ॥

मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफल ज्ञयमाधमदीपम् ।

भक्त्या नित्यमथ दे श्रुत्महमखिल सर्व लोकेकसारम् ॥

ॐ ह्रीं भोजिनमुखोत्पन्नाथे भगवत्यै वाग्देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति
स्वाहा ।

धर्मं सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाधिन्वत ।

धर्मैव समाप्यते शिवसुख धर्माय तस्मै नमः ॥

घर्मान्नास्ति परसुहृद्रवभृता धर्मस्य मूलं दया ।

धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ।

ॐ ह्रीं मर्ध्नातरागप्रखीतशारवतघर्माय अर्घं निर्बपा
मीति स्वाहा ।

कृत्या कृत्रिमचारचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान् ।

बन्धेभावनव्यन्तरघुतिवरस्वर्गामरायासगान् ॥

सद्गन्त्रासतं पुष्पचारचरुमिर्दोषैश्च धूपैः फलैः ।

नीराश्रयैश्च यजेत्पण्डित्यगिरसा दुष्कर्मणा शान्तये ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिभोजिनालयेभ्योऽर्घं निर्बपामीति स्वाहा ।

यावन्ति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये ।

तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिभ्य श्रीश्रीतरागप्रतिविम्बेभ्योऽर्घं निर्बपा
मीति स्वाहा ।

सिद्धपूजा ।

स्थापना (इन्द्रवज्रा)

सिद्धान् प्रसिद्धान् वसुधर्मपुक्तान् ।

त्रैलोक्यशीर्षे स्थितचिद्विलासान्

सस्यापये भावशुद्धिदातृन् ।

सन्मङ्गलमाज्यसमृद्धयऽहम् ॥१॥

ॐ ह्रीं वसुधैवकुतूभासिद्धिममूह । अत्र अवतर अवतर
भवोपट् । (इत्याह्वानतम्)

ॐ ह्रीं वसुधैवकुतूभासिद्धिममूह । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ
(इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं वसुधैवकुतूभासिद्धिममूह । अत्र मम मन्निहितो भव
भव यपट् (इति मन्निष्ठापनम्)

ॐ ह्रीं गीरजमे नम (भूमिशुद्धि)

ॐ ह्रीं दधमधाय नम (जलम्)

ॐ ह्रीं शीतगंधाय नम (चन्दनम्)

ॐ ह्रीं अक्षयाय नम (अक्षतम्)

ॐ ह्रीं विमलाय नम (पुष्पम्)

ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नम (नेत्रेषुम्)

ॐ ह्रीं क्षान्तिदात्राय नम (दीपम्)

ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नम (धूपम्)

ॐ ह्रीं अर्घ्याष्टकादाय नम (फलम्)

(रथोद्धता)

अष्टकर्मगणनष्टकारकान् , षष्टकु दत्तिसुदृष्टगायदान् ।

स्वष्टोषपरिमीतविष्टपान्, अर्घ्यतोऽघनशमाय पूजये ॥१॥

ॐ ह्रीं वसुधैवकुतूभासिद्धिममूह । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ
इसक बाद भीष की कदनी में विराजम् ॥

श्रुतपूजा ।

(रघोद्धता)

दशागमखिलंश्रुत मया, पाणिपीडनमहोत्सवेऽधुना ।
पने यदधिधर्मममत्रो, द्वैधयैष जगतामसीदति ॥१॥

ॐ ह्रीं द्वादशागम्रतायाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इमं वाद तीमरी (ऊपर ही) कृत्नी में विरात्रमान —

गुरु पूजा तथा धर्मचक्र पूजा ।

(रघोद्धता)

ऋद्धयो बलरसादि विक्रियाँ, पथ्यसन्नयमहानसादिका ।
यत्कर्मांबुहवासमासते, तान्गुरुनमिमहामि धार्मुखैः ॥१॥

ॐ ह्रीं महर्द्धिधारवपरमार्धभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमगलपिद पदाशुजे, भासते शतसुमगलौषदम् ।
धर्मचक्रममिपूजये वर, फर्मचक्रपरिनाशनाघतम् ॥१॥

ॐ ह्रीं धमचक्रायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

इसके बाद अग्निकुण्ड में साधिये बनावे और ॐ लिपे और शुद्ध तथा शुष्क लकड़िया (चन्दन सफेद, चन्दन लाल, हलदी लकड़िया, झीली हुई आक की लकड़ियाँ और कपूर) रखे और गार्हपत्य नाम की अग्नि प्रज्वलित करे और बाद में नीचे लिखे मंत्र से अर्घ्य प्रदान करे।

था तीर्थनाथपरिनिर्हृतिपूज्यकाले,
आगत्य वह्नि सुरपा मुकुटोल्लसद्भिः ।
वह्निप्रजैर्निनपद्रेहमुदारभवत्या,
देहस्मदाग्निमहर्चयितु दधामि ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थकरकुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति
स्वाहा ।

दहन विधि

पूजन के बाद यह क्रिया करनी चाहिये। दहनकुण्ड की रचना पूर्व में बताई जा चुकी है, इसके अनुसार तैयार कर लेना चाहिये। नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ये कार्य गृहस्थाचार्य और करें।

सूत्र घेष्टन = ॐ ह्रीं पचवर्णसूत्रेण श्रीन्वारान् घेष्टयामि
स्वाहा । यह मंत्र बोलकर मंगल सूत्र पक दूसरी सूटी से घेष्टित
कर बाध द ।

इसके बाद गृहस्थाचार्य घर कन्या द्वारा पूजन करावें।
इसी समय दहन कुण्ड के चारों ओर चार सपुङ्कसरा नीचे
लिखा मंत्र पढ़कर स्थापित करें।

ॐ ह्रीं रपस्तये चतुःकलशान् भस्वापयामि स्वाहा

घाद में अग्निकुण्ड में अघृत बिझाकर पुष्पों से अग्नि-
मंडल में या स्वस्तिक बनाकर रखते। हवन की सब सामग्री
को यथास्थान रखकर घाद में प्रासुक जल से तूल द्वारा भूमि का
शोधन और सामग्री का शोधन नीचे लिखे मात्र द्वारा करे।

ॐ ह्रीं पवित्र तर जलेन शुद्धि करोमि स्वाहा । पीछे कुण्ड
में समिधियां स्थापित कर दे और कपूर या डाम के तूल से
अग्नि संस्थापन मात्र को पढ़ कर अग्नि प्रज्वलित करे ।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि संस्थापयामि स्वाहा ।

अब आगे लिखे कुण्ड के पूजन को करना चाहिये ।

ओ तीर्थनाथ परिनिवृत्ति पूष्यकाले,
आमत्य वह्नि सुरपामुकुटाळसद्भिः ।
वह्निर्जैर्जिनपदेऽहमुदारभवत्या,
देहुस्तदाग्नि महमर्चयितु दधामि ॥

ॐ हो प्रथमे चतुरस्रे तीर्थं कर कुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

मणाघिषाना शिवमाप्तिकालेऽ
ग्नीन्द्रोत्तमाङ्ग स्फुरदाग्निरेषः ।
सस्थाप्य पूष्यः सममाहनीयो
विवाह शांती विधिना हुतीशः ।

ॐ ह्रीं द्वितीये वृत्ते गणधर कुण्डे आहनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्व
पामीति स्वाहा ।

श्रीदक्षिणाग्नि परक्रेयलि
स्वशरीर निर्वाणतुताग्निदेव
त्रिरीट संस्फुर दसौ मयापि
सस्याप्य पुनामि विवाह शान्त्यै ।

ॐ ह्रीं त्रिकोणे सामान्य केवलितुएढे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यं
निर्वशामीति स्वाहा ।

इसके उपरान्त गृहस्थाचार्य निराकुलता से मन्त्रों का
गुद उच्चारण करते हुए वर और कन्या के हाथ से घृत मिश्रित
दहन द्रव्य को आहुतिया दहन कुण्ड में दिखावे ।

अथ पीठिका मंत्र ।

- ॐ सत्यज्ञाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥१॥
ॐ परमज्ञाताय नमः ॥३॥ ॐ अनुपमज्ञाताय नमः ॥४॥
ॐ स्वमघानाय नमः ॥५॥ ॐ अचलाय नमः ॥६॥
ॐ अक्षयाय नमः ॥७॥ ॐ अव्याबाधाय नमः ॥८॥
ॐ अनतज्ञानाय नमः ॥९॥ ॐ अनन्तदर्शनाय नमः १०॥
ॐ अनतवीर्याय नमः ॥११॥ ॐ अनतसुखाय नमः ॥१२॥
ॐ नीरजसे नमः ॥१३॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥१४॥
ॐ अन्डेयाय नमः ॥१५॥ ॐ अमेधाय नमः ॥१६॥
ॐ अमराय नमः ॥१७॥ ॐ अमराय नमः ॥१८॥

ॐ अमयेयाय नमः ॥१९॥ ॐ अगर्भवासाय नमः ॥२०॥
 ॐ अक्षोभाय नमः ॥२१॥ ॐ अत्रिलीनाय नमः ॥२२॥
 ॐ परमधनाय नमः ॥२३॥ ॐ परमकाष्ठायोगरूपाय नमः ॥२४॥
 ॐ लोकाग्रवासिने नमोनमः ॥२५॥ ॐ परमसिद्धभ्यो
 नमोनमः ॥२६॥ ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥२७॥
 ॐ केवलिसिद्धभ्यो नमोनमः ॥२८॥ ॐ अतकृत्सिद्धेभ्यो
 नमोनमः ॥ २९ ॥ ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमोनमः ॥३०॥
 ॐ अनादिपरम्परा सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥३१॥ ॐ अनाद्य
 नुपमसिद्धेभ्यो नमोनमः ॥३२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे आसन्न-
 मव्यनिर्वाणपूजार्ह अर्गोद्राय स्वाहा ॥३३॥

(इस प्रकार ३३ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा काम्य मात्र पढ़कर एक आहुति देवे और पुष्प से अपने तथा सब पास बैठने वालों के ऊपर डाले)

सेवाफल पदपरमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
 भवतु, समाप्तिमरण-भक्तु, स्वाहा ।

अथ जातिमत्र ।

ॐ सत्यजन्मन शरण प्रपद्ये ॥१॥ ॐ अर्हजन्मनः शरण
 प्रपद्ये ॥२॥ ॐ अर्हन्मातुः शरण प्रपद्ये ॥३॥ ॐ अर्हत्सुतस्य
 शरण प्रपद्ये ॥४॥ ॐ अनादिगमनस्यशरण प्रपद्ये ॥५॥
 ॐ अनुपजन्मन, शरण प्रपद्ये ॥ ६ ॥ रत्नत्रयस्य शरण
 प्रपद्ये ॥ ७ ॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते
 सरस्वति सरस्वति स्वाहा ॥ ८ ॥

(इस प्रकार ८ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद-
सूचक काम्यमंत्र पढ़ कर एक आहुति देवे ।)

सेवाफल पट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
भवतु, समाधिपरम भवतु स्वाहा ॥

अथ निस्तारकमंत्र ।

ॐ सत्यमाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हवनाताय स्वाहा
॥ २ ॥ ॐ पट्कर्मणे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ग्रामपतये स्वाहा
॥४॥ ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ॥५॥ ॐ स्नातकाय
स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ आरकाय स्वाहा ॥७॥ ॐ देवमाह्व-
णाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ सुव्राक्षणाय स्वाहा ॥ ९ ॥
ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१०॥ ॐ सव्यगृष्टे सव्यगृष्टे निधिपते
निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा ॥ ११ ॥

(इस प्रकार ११ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशी-
र्वाद सूचक काम्यमंत्र पढ़ कर एक आहुति देवे)

सेवाफल पट्परमस्थान भवतु अपमृत्युविनाशन
भवतु, समाधिपरम भवतु स्वाहा ।

अथ ऋषिमंत्र ।

ॐ सत्यमाताय नमः ॥१॥ ॐ
ॐ निर्ग्रन्थाय नमः ॐ वीतरागाय

ॐ महाव्रताय नमः ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नमः ॥६॥ ॐ महा-
योगाय नमः ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नमः ॥८॥ ॐ विविध-
दर्शये नमः ॥९॥ ॐ अगधगाय नमः ॥१०॥ ॐ पूर्वधराय नमः
॥११॥ ॐ गणधराय नमः ॥१२॥ ॐ परुमर्षिभ्यो नमो नमः
॥१३॥ ॐ अनुपमजाताय नमोनमः ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे
सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण
स्वाहा ॥१५॥

(इस प्रकार १५ आहुति देकर फिर नीचे लिखा आशीर्वाद
मूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे)

सेवाफल पट्परमस्थानं भवतु, अमृत्युविनाशन
भवतु, ~~समाधिपत्तम्~~ भवतु, स्वाहा ।

अथ सुरेन्द्रमन्त्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा
॥२॥ ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ॥३॥ ॐ दिव्यार्चिजाताय
स्वाहा ॥४॥ ॐ नमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ सौधर्माय
स्वाहा ॥६॥ ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुचराय
स्वाहा ॥८॥ ॐ परपरेंद्राय स्वाहा ॥९॥ ॐ अहमिन्द्राय
स्वाहा ॥१०॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥११॥ ॐ अनुपमाय
स्वाहा ॥१२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते
दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा ॥१३॥

(इस प्रकार १३ मंत्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे
लिखा आशीर्वादसूचक कान्यमन्त्र पदकर एक आहुति देवे ।

सेवाफल पट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
भवतु, ~~समधिपस्य भवतु~~, स्वाहा ।

परमराजादिमन्त्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा
॥२॥ ॐ अनुपमैद्राय स्वाहा ॥३॥ ॐ विजयान्न्यजाताय
स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनायाय स्वाहा ॥५॥ ॐ परमजाताय
स्वाहा ॥६॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुपमाय
स्वाहा ॥८॥ ॐ सम्पगृष्टे सम्पगृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः
दिशांजन दिशांजन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ॥९॥

(इस प्रकार ९ मंत्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे
लिखा आशीर्वादसूचक कान्यमन्त्र पद कर एक आहुति देवे)

सेवाफल पट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
भवतु, ~~समधिपस्य भवतु~~, स्वाहा ।

परमेष्ठिमन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जातः
॥२॥ ॐ परमजाताय

ॐ महाव्रताय नमः ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नमः ॥६॥ ॐ महा-
योगाय नमः ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नमः ॥८॥ ॐ विविध-
र्द्धये नमः ॥९॥ ॐ अगघराय नमः ॥१०॥ ॐ पूर्वघराय नमः
॥११॥ ॐ गणघराय नमः ॥१२॥ ॐ परुमर्षिभ्यो नमो नमः
॥१३॥ ॐ अनुपमजाताय नमोनमः ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे
सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण
स्वाहा ॥१५॥

(इस प्रकार १५ आहुति देकर फिर नीचे लिखा आशीर्वाद
मूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे)

सवाफल षट्परमस्थान भवतु, अमृत्युविनाशन
भवतु, ~~समाप्तिमस्तु~~ स्वाहा ।

अथ सुरेन्द्रमन्त्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्द्धजाताय स्वाहा
॥२॥ ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ॥३॥ ॐ दिव्यार्चिजाताय
स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ सौघर्माय
स्वाहा ॥६॥ ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुचराय
स्वाहा ॥८॥ ॐ परपरेंद्राय स्वाहा ॥९॥ ॐ अहमिन्द्राय
स्वाहा ॥१०॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥११॥ ॐ अनुपमाय
स्वाहा ॥१२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे
दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वृ
॥

(इस प्रकार १३ मन्त्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे
लेखी आशीर्वादसूचक कान्यमन्त्र पढ़ कर एक आहुति देवे ।

सेवाफल पट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
भवतु, समाधिभवतु, स्वाहा ।

परमराजादिमन्त्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा
॥२॥ ॐ अनुपमैद्राय स्वाहा ॥३॥ ॐ विजयान्यजाताय
स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनायाय स्वाहा ॥५॥ ॐ परमजाताय
स्वाहा ॥६॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुपमाय
स्वाहा ॥८॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः
दिशांजन दिशांजन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ॥९॥

(इस प्रकार ६ मन्त्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे
लेखी आशीर्वादसूचक कान्यमन्त्र पढ़ कर एक आहुति देवे)

सेवाफल पट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
भवतु, समाधिभवतु, स्वाहा ।

परमेष्ठिमन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः
॥२॥ ॐ परमजाताय नमः ॥३॥ ॐ परमार्हताय नमः ॥४॥

ॐ परमरूपाय नम ॥५॥ ॐ परमतेजसे नम' ॥६॥
 ॐ परमगुणाय नम ॥७॥ ॐ परमस्थानाय नमः ॥८॥
 ॐ परमयोगिने नमः ॥९॥ ॐ परमभाग्याय नमः ॥१०॥
 ॐ परमर्द्धये नम. ॥११॥ ॐ परमप्रसादाय नमः ॥१२॥
 ॐ परमकाशिताय नमः ॥१३॥ ॐ परमविजयाय नम.
 ॥१४॥ ॐ परमविज्ञानाय नम ॥१५॥ ॐ परमदर्शनाय
 नम. ॥१६॥ ॐ परमशीर्षाय नम ॥१७॥ ॐ परमसुखाय
 नम' ॥१८॥ ॐ परमसर्वज्ञाय नम. ॥१९॥ ॐ अर्हते नमः
 ॥२०॥ ॐ परमेष्ठिन नमः ॥२१॥ ॐ परमनम्रे नमो नम.
 ॥२२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रैलोक्यविजय त्रैलोक्य
 विजय धर्ममूर्त्ते धर्ममूर्त्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा ॥२३॥

(इस प्रकार २३ मंत्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे
 लिखा आशीर्वादसूचक काम्यमन्त्र पढ़ कर एक आहुति देवे)

सेवाफल पदपरमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन
 भवतु, ममभिमन्त्र-भक्तु स्वाहा ॥

धूपैः सन्धूपितानेक, कर्मभिर्धूपदायिन' ।

अर्चयामि जनाधीश, सदागमगुरुन् गुरुन् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनप्रतगुरुभ्यो नम धूपम् ।

सुरभोकृतदिग्रतै धूपधूमैर्जगत्प्रियै ।

यजामि जिनसिद्धेश, सूर्युपाध्यायसद्गुरुन् ॥२॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः धूपम् ।

मृद्वग्निसगमसमुज्वलतोद्युधूमैः ।

कृष्णागुरुमृत्तिसुन्दरवस्तुधूपैः ॥

भीत्यानटद्विरिव ताण्डवनृत्यमुच्चैः ॥

कर्मारिदारुदहनं जिनमर्चयामि ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने धूपम् ।

गोत्रक्षयसंभवसततसभवं, सद्गुरुलघुतारूपपरं ।

सर्गमसर्गमपीतमनुक्षण, सुज्जितसर्गासर्गमरम् ॥

कृष्णागुरुधूपैः सुरभितभूपैर्धूमैः स्पष्टहरिद्रूपै—

र्यायज्मःसिद्ध सर्वविशुद्ध बुद्धमरुद्धं गुणरुद्धम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धिपरमेष्ठिने धूपम् ।

हुत्वास्वमप्यगुरुभिः सुरभीकृतागै—

रग्नौ समुच्छलित संमृतचृन्दधूपैः ।

सधूपयामि चरणं शरणं शरण्य ॥

पुण्यं भवभ्रमहरैर्गणिना मुनीनाम् ॥५॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिने धूपम् ।

सधूपिताखिलदिशोघनशङ्कयेह.

वर्हित्रज स्वनटनादिव नर्तयद्भिः ।

मृद्वग्निसंगतिततागुरुधूपधूमैः,

श्रीपाठक क्रमयुग वयमामहामः ॥६॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिने धूपम् ।

स्वमग्नौ विनिसिष्य दार्गध्यप्रथम्,

दशाशास्यमुच्चैः करोति त्रिसध्यम् ॥

तदुद्दामकृष्णागुच्छद्रव्यधूपैः ।

यजेसाधुसधुनट्टद्व्यक्तरूपैः ॥७॥

ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने धूवन् ।

धूपैः संधूपितानककर्मभिर्धूपटापिनः ।

हृपभादिनिनाधीशान्, वर्द्धमानान्तकान्यजे ॥८॥

ॐ ह्रीं वृषमारिषीरान्तपतुर्वि शक्ति जिनेभ्यो धूवम् ।

अप्युक्त विधि से हवन करने के परधात् ।

ग्रन्थिघघन (गठभोड़ा)

इसका अर्थ है कि घर और कन्या का आजन्म पर्यन्त लौकिक, धार्मिक और गार्हस्थ्यक दृढघघन पूषक रहना । इसलिये इस कार्य को देव-गुरु शास्त्र, अग्नि और समस्त पंच, स्त्री, पुठप समाज के समस्त नीचे क्लिया श्लोक पढ़कर करना चाहिये ।

अस्मिन्नन्मयेपवधोद्वयोर्वै,

कामे घर्मे वा गृहस्यत्वमाजि ।

योगो जातःपचदेवाग्नि साक्षी

जायापत्योरचल यधिवन्धात् ।

नोट—कन्या की ओढ़नी या साड़ी का सोपा पल्ला और घर का दुपट्टा (बीटली) लेकर कन्या के पक्षों में एक सुपारी

और अक्षत व धादी रखकर सवासिनी या अन्य किसी सौभाग्यवती स्त्री द्वारा एक दूसरे से गठ बाध देनी चाहिये ।

हथलेवा

गृहस्थाचार्य अथवा कन्या का पिता सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा संस्कारित हल्दो से कन्या का बाया हाथ और वर का दाहिना हाथ लेपन करे और गृहस्थाचार्य कन्या का हाथ नीचे और वर का हाथ ऊपर रख दोनों के हाथ मिलावै अर्थात् हथलेवा जोड़े । पश्चात् कन्या का पिता अपनी शक्ति के अनुसार दहेज देवे । और हथलेवा छुड़ा दिया जाय ।

फेरे या सप्तपदी

गठजोड़ा और हथलेवा होने के पश्चात् सप्तपरमस्थान की प्राप्ति के लिये कन्या को आगे और वर को पीछे कर, उस संस्कार वेदी के चारों ओर छह फेरे दिलाने चाहिये पीछे छठे फेरे के समाप्त होने पर कन्या और वर को अपने स्थान पर खड़ा कर देना चाहिये । अब आगे बतार्हे हुई वर और कन्या की ओर से प्रतिज्ञाएँ गृहस्थाचार्य को सुनासा कर बतानी चाहिये । इन्हें सुन, समझ कर वर और कन्या परस्पर में प्रतिज्ञा-पत्र हों ।

घर की तरफ से सात प्रतिज्ञाएँ ।

१ मम कुटुम्बजनानां यथायोग्य विनयशुश्रूषा करणीया ।

अर्थात् मेरे कुटुम्बियों की यथायोग्य सेवा, विनय, आदर सत्कार करना ।

२ ममाज्ञा न लोपनीया ।

अर्थात् मेरी आज्ञा को कभी भंग मत करना ।

३ कटु निष्ठुरवाक्यं न वक्तव्यम् ।

अर्थात् कटुवा और मर्मभेदी बचन मत बोलना ।

४ सत्यात्रादिजनेभ्यो गृहागतेभ्य आहारादिदाने क्लृपित मनो न कार्यम् ।

अर्थात् सत्यात्रादि (मुनि, आर्यिका, श्रावक, भाषिका, आदि) के घर आने पर अपने मन को क्लृपित मत करना ।

५ रात्रौ परगृहे न गंतव्यम् ।

अर्थात् रात को किसी दूसरे के घर पर मत जाना ।

६ बहुजनसकीर्णस्थान न गतव्यम् ।

अर्थात् महा बहुत से आदमी जमा हो रहे हों ऐसे स्थान पर मत जाना ।

७ कुत्सितधर्मि मद्यपायिनां गृहे न गतव्यम् ।

अर्थात् जिनका आचरण और धर्म खराब है—वेसे मद्यपि पीनेवाले और मिथ्याधर्म वाला के घर पर मत जाना ।

एतानि मदुक्तानि वचनानि यदि स्वीकारोषि तदा मम धामाङ्गी भव ।

अर्थात् यदि मेरी इन बातों शर्तों को तुम मंजूर करो तो मेरी पत्नी हो सकती हो ।

तब बधू कहे—

यगवतः कल्याण करिष्यन्ति ।

अर्थात् ये धर्मस्त प्रतिष्ठाए मुझे मंजूर हैं ।

कन्या की तरफ से सात प्रतिज्ञाएँ ।

१ अन्यस्त्रीभिः सार्द्धं क्रीडा न करणीया ।

अर्थात् अन्य स्त्रियों के साथ क्रीडा मत करना ।

२ वैश्यागृहे न गतव्यम् ।

अर्थात् वैश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना ।

३ धृतक्रीडा न कार्या ।

अर्थात् नूषा मत खेलना ।

४ सदुद्योगाद् द्रव्यमुपाज्यं यस्त्राभरणैः, रक्षणीया ।

अर्थात् न्यायानुवृत्त उद्योग धन्धे से घन कमाकर बस्त्राभरण से मेरी रक्षा करना ।

५ धर्मस्थानगमने न वर्जनीया ।

अर्थात् मन्दिर तीर्थ क्षेत्रादि धर्म स्थान पर जाने से मुझे मत रोकना ।

६ गुप्त वार्ता न करणीया ।

अर्थात् कोई बात मुझसे गुप्त मत करना ।

७ मम गुप्त वार्ता अन्याग्रे न कथनीया ।

अर्थात् मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना ।
'भगवन्तः कल्याणं करिष्यन्ति' इति वरो वदेत् ।

अर्थात् इसके उत्तर में वर कहे कि ये सातों प्रतिज्ञाएँ मुझे मंजूर हैं ।

इसके आगे सातवाँ फेरा हो । इस फेरे में वर आगे और क्या पीछे होना चाहिये । क्योंकि छठे फेरे तक कन्या की कन्या ही सजा रहती है किन्तु सातवें फेरे में वह बधू हो जाती है । कारण यह है कि अब वह पति द्वारा प्रतिष्ठाबद्ध हो चुकी है और पति की अनुगामिनी बन रही है ।

इसके बाद बधू को वर के बाम अङ्ग पर कर देना चाहिये । और गृहस्थाचार्य दोनों के मस्तक उपर पद्म स्नेप्य करे तथा

वर अपने हाथ से वधू को जगलो की माला और पुष्पमाला पहिनावे इसके बाद वर और वधू बैठें नहीं वेदी के सामने खड़े रहें।

ग्रहस्थाचार्य द्वारा उपदेश

हे दम्पति अब तुम पति पत्नी हुये हो। अब तुम्हारा याव जीवन को सम्बन्ध हुआ है। इसलिये तुम धर्म, अर्थ, काम को अविरोध रूप से सेवन करते हुए मोक्ष पुरुषार्थ को साधने के लिये प्रयत्नशील होना क्योंकि केवल धर्म, अर्थ और काम के सेवन से सन्मार्ग की प्राप्ति नहीं होती है। इससे इस प्रकार सुयोग के मिल जाने पर तुम्हें मोक्षमार्ग पर प्रवृत्त होना चाहिये।

तदन्तर गृहस्थाचार्य हाथ में ऋक्ष लेकर जल की घारा देता हुआ नीचे लिखा पुण्याह पावन पठे।

ॐ पुण्याह पुण्याह। लोकोद्योतनकरा अतीतकाल-संजाता निर्वाणसागरमहामाधुविमलप्रभशुद्धामश्रीधरसुद-त्तामलप्रभोद्धराग्निसन्मतिशिवकुसुमांजलिशिवगणोत्साहज्ञानेश्वर परमेश्वरविमलेश्वरयशोधरकृष्णमतिज्ञानमतिशुद्धमति-श्रीमद्रशांताश्चेति चतुर्विंशतिभूतपरमदेवाश्च वः प्रीयता प्रीयताम् ॥घारा ॥१॥

ॐ सप्रतिकालभेषकरस्वर्गावतरणजन्माधिषेकपरि-

श्रोत्रपमानितशमवाभिनदनसुपतिपद्ममसुपार्श्वघट्टमपपुष्प-
 दतशीतलश्रेयोवासुपूज्यविमलाननधर्मशांतिकुश्वरमच्छिमुनि—
 सुव्रतनमिनामिपार्श्ववर्द्धमानार्चेतिवर्तमानचतुर्विंशतिपरदेवाश्च
 वः प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥२॥

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रमवा महापद्मसुरदेवसुमभस्वर्षप्र-
 भसर्वायुधजयदेवोदयदेवप्रभादेनोदङ्गदेवप्रश्नकीर्तिजयकीर्ति-
 पूर्णबुद्धिनि'कपायविमलप्रमबहलनिर्मलचित्रगुप्तसमाधिगुप्त-
 स्वयभूकदर्पजयनायविमलनायदिव्यवागनतवीर्याश्चेति—
 चतुर्विंशतिभविश्यत्परमदेवाश्च वः प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥३॥

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सामधरयुग्मधरषाहु-
 सुबाहुसजातकस्वयमभरूपभेश्वरानतवीर्यसूरप्रमविशाल-
 कीर्तिवज्रधरचद्राननचद्रवाहुभुजगेश्वरनेमिप्रमवीरसनमहामद्र
 जयदेवाजितवीर्याश्चेति पञ्चविदेहक्षत्रविहरमाणा विशतिपरम-
 देवाश्च वः प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥४॥

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥५॥

ॐ कोष्ठवीनपादानुनारिबुद्धिसभिन्नभोग्रपज्ञाश्रयणाश्च वः
 प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥६॥

ॐ ग्रामर्षक्षेत्रेडनल्लत्रिहुत्तर्गसर्गैपधिकृद्भयश्च वः प्रीयतां
 प्रीयतां ॥ धारा ॥७॥

ॐ जलफलजघातन्तुपुष्पश्रेणिपत्राग्निशिखाकाशचारणाश्च
वः प्रीयता प्रीयतां ॥ धारा ॥८॥

ॐ आहाररसउदक्षीणमहानसालयाश्च वः प्रीयता प्रीयतां ॥
धारा ॥९॥

ॐ उग्रदीप्ततप्तमहाघोरानुपमतासश्च वः प्रीयतां प्रीयतां ॥
धारा ॥ १० ॥

ॐ मनोवाकायत्रलिनश्चवः प्रीयतां प्रीयता ॥ धारा ॥११॥

ॐ क्रियाविक्रियाधारिणश्चवः प्रीयता प्रीयतां ॥ धारा ॥१२॥

ॐ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयतां प्रीयतां
धारा ॥१३॥

ॐ अर्गांगवाद्यज्ञानदिवाकराः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगवरदेवाश्च
वः प्रीयता प्रीयतां ॥ धारा ॥१४॥

इह वाऽन्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे शुद्धभक्ताः
जिनधर्मपरायणा भवन्तु ॥ धारा ॥१५॥

दानतपोवीर्यानुष्ठान नित्यमेवास्तु ॥ धारा ॥१६॥

मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रसुहृत्स्वजनसंरंधिवधूसहितस्य
अमुकस्य ॐ ते धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः
प्रवर्द्धतां ॥ धारा ॥१७॥

शांतिधारा ।

तृष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु ।
 अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । अरोग्यमस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु ।
 इष्टसंपत्तिरस्तु । पापमागल्योत्सवाः सतु । पापानि शाम्यतु ।
 घोरानि शाम्यन्तु । पुण्यं वर्द्धतां । धर्मो वर्द्धताम् ।
 श्रीवर्द्धताम् । कुल गौत्र चाभिरधेताम् । मरुस्ति मद्र चास्तु ।
 भूर्वा इर्वा इ स' स्वाहा । श्रीमज्जिनैर्द्रचरणारविदेव्या-
 नन्दमक्तिः सदास्तु ।

इस प्रकार मंगलकलरा से धारा छोड़ते हुए पुण्याहवाचन क
 होजाने पर बधू को घर के मायें तरफ करके बैठा देना चाहिए ।

निम्नलिखित मंगलाष्टक बोलना चाहिए ।

श्रीमन्नमसुरासुरे द्रमुकुटप्रद्योतगन्तमया ।

भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोर्धीदिवः स्यायिनः ॥

ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठका माधवः ।

स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मगलम् ॥१॥

नाभेयादिजिनाधपास्त्रिभुवनरुघ्याताश्चतुर्विंशतिः ।

श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥

य विष्णुमसिबिष्णुलांगलधराः सप्तोज्जराः विंशतिः ।

स्त्रैलोक्यैप्रयितास्त्रिपण्ठिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मगलम् ॥२॥

ये पञ्चोषधऋद्धयः सुतपसोऋद्धिगताः पञ्च ये ।

ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तिकुशलाश्वाष्टौविधाश्चारणाः ॥

पञ्चज्ञानधराश्चयेऽपि 'विपुना ये बुद्धिरुद्रोश्वराः ।
 सप्तैते सकलाश्चते मुनिवराः कुर्वतु ते मगलम् ॥३॥
 ज्योतिर्व्यं तरभावनामागृहे मेरा कुतार्द्रा स्थिताः ।
 नम्रूगात्पत्तिचैत्यशास्त्रिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ॥
 इक्ष्वाकारगिर्गौ च कुण्डलनगे द्वीपेच नन्दीश्वरे ।
 गेले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वतु ते मगलम् ॥४॥
 कैलासे तृपमस्य निरृतिमहीवोरस्य पावापुरे ।
 चम्पायां चसुपूज्यमजितनरनेः सम्भेदगैलेर्हताम् ॥
 शेषाणामपि चोर्जघन्तशिखरेनेमीश्वरस्पाहता ।
 निर्वाणायनयः प्रसिद्धमहिताः कुर्वतु ते मगलम् ॥५॥
 यो गर्भावतरोत्सवोभगवतां जन्माभियेकोत्सवो ।
 यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥
 यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा समाविनः स्वर्गिभिः ।
 कल्याणानि च तानि पच सतत कुर्वन्तु ते मगलम् ॥६॥
 जायन्ते जिनचक्रवर्तिबलमृद्गीनीन्द्रकृष्णादपा ।
 धर्मादेव दिगगनागविलसच्छश्वद्यशधन्दनाः ॥
 तद्धीनाः नरकादियोनिषु नराः दुःख महन्तेऽबुवम् ।
 सस्वर्गान्सुखरामणीयरूपदं कुर्वतु ते मगलम् ॥७॥
 सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते ।
 सपथ रसायन विषमपि प्रीति विधत्ते रिपुः ॥

शांतिधारा ।

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु
 अग्निधनमस्तु । आयुष्यमस्तु । अरोग्यमस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु ।
 इष्टसप्ततिरस्तु । काममागल्योत्सवा* सतु । पापानि शाम्यन्तु ।
 घोराणि शाम्यन्तु । पुण्य वर्द्धता । धर्मो वर्द्धताम् ।
 श्रीवर्द्धताम् । कुल गौत्र चाभिवर्द्धताम् । स्वस्ति भद्र चास्तु ।
 भर्वा भर्वा इ स. स्वाहा । श्रीमज्जिनैद्रचरणारविदेष्वा-
 नन्दमक्ति सदास्तु ।

इस प्रकार मंगलकलश से धागा छोड़ते हुए पुण्याहवाचन के
 होजाने पर बधू को घर के बायें तरफ फरके बैठा देना चाहिए ।

निम्नलिखित मंगलाष्टक बोलना चाहिए ।

श्रीमन्नमसुरासुरे द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।

भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्पोर्धीदव. स्थायिनः ॥

ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठका साधव. ।

स्तुत्या योगिनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥

नाभेयादिजिनाघपास्त्रिभुवनरुष्याताश्चतुर्विंशति ।

श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वात्रिंश ॥

ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधरा* सप्तोत्तरा*विंशति ।

स्त्रैलोक्येप्रथितास्त्रिपष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥

ये पञ्चोपधरुद्धप. सुतपसोऋद्धिगता. पञ्च ये ।

* चाष्टाङ्गमहानिमिचिकुशलाश्वाष्टौविधाश्चारणा* ॥

पञ्चज्ञानधराश्चयेऽपि 'विपुला ये बुद्धिऋद्धोश्वराः ।
 सप्तैते सकलाश्चते मुनिवराः कुर्वतु ते मंगलम् ॥३॥
 ज्योतिर्व्यतरभावनामरगृहे मेरी कुलाद्रौ स्थिताः ।
 नम्बूगाल्मनिचैत्यशाखिषु तथा चक्षारम्भ्याद्रिषु ॥
 इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपेच नन्दोश्वरे ।
 गौले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वतु ते मंगलम् ॥४॥
 कैलासे वृषभस्य निवृत्तिमहोत्तोरस्य पावापुरे ।
 चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनरतेः सम्पेदशैलेर्हताम् ॥
 शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरेनेमीश्वरस्यार्हता ।
 निर्वाणावनयः प्रसिद्धमहिताः कुर्वतु ते मंगलम् ॥५॥
 यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो ।
 यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥
 यः कैवल्यपुरमत्रेशमहिमा सभाविनः स्वर्गिभिः ।
 कन्याणानि च तानि पच सतत कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥६॥
 जायन्ते निनचक्रवर्तिरलभृद्भोगोन्द्रकृष्णादयो ।
 धर्मादेव दिग्गनागविलसच्छश्वद्यशश्चन्दनाः ॥
 तद्भोना' नरकादियोनिषु नराः दुःख सहन्तेऽनुवम् ।
 सस्वर्गसुखरामणीयरूपदं कुर्वतु ते मंगलम् ॥७॥
 सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते ।
 सपथेन रसायन विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः ॥

देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः क्रिया बहुभूमहे ।
 धर्मादेव नभोपि वर्षति नगै कुर्वतु ते मंगलम् ॥८॥
 इत्य श्रोत्रिनमगलाष्टकमिदं सौभाग्यसप्तकरम् ।
 कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थकराणांमुखा ॥
 ये श्रृण्वन्ति पठन्ति ते च सुजना धर्मार्थशापान्विता ।
 लक्ष्मीराश्रयते व्ययायद्विता कुर्वतु ते मंगलम् ॥९॥

इति मंगलाष्टकम् ।

दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु,
 सद्बुद्धिरस्तु धनधान्यममृद्धिरस्तु ।
 धारोग्यमस्तु विजयोऽस्तु महोस्तु पुत्र,-
 पीत्रोद्भवोस्तु तत्र सिद्धिपतिप्रसादात् ॥१॥

तिष्णकमत्र ।

मंगल भगवान् वीरो मंगल गौतमीगणी ।
 मंगल कुन्दकुन्दाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥१॥

~~हृभलेना लुडाना ।~~

~~इत्येवम् हृभलेना लुडाने न्त इत्यत्र कश्चिदेव शौरि वधू
 शोरो के इत्येव (विद्युत्प्रणारागविधौ इत्यादि ज्ञानमासा मोलकर)
 शर्षे चदमये शौरि मुग्धमन्त्रि ज्ञेयत्वं कसमे । तत्परचात्~~

शान्तिस्तत्र ।

अगति शान्तिविवर्धनमहसां,
 प्रलयमस्तु जिनस्तपनेन मे ।
 सुकृतबुद्धिरल क्षमयायुतो,
 जिनघृषो हृदये मम वर्तताम् ॥१॥
 चिद्रूपभावमनवद्यमिम त्वदीय,
 ध्यायन्ति ये सदुपधिष्यतिहारमुक्तम् ।
 नित्य निरजनमनादिमनन्तरूप,
 तेषां यदासि भुवनत्रितये लसन्ति ॥२॥
 ध्येयस्त्वमेव भवपचतयप्रसार,-
 निर्णेशकारणविधौ निपुणत्वयोगात् ।
 आत्मप्रकाशकृतलोकतदन्यभाव,-
 पर्यायविस्फुरणकृत्तरमोऽसि यागी ॥३॥
 स्वन्ताममघनमुद्धतजन्मजात,-
 दुःकर्मदात्रमभिशम्य शुभांकुराणि ।
 व्यापादयत्यतुल्यभक्तिसमृद्धि भाजि,
 स्वामिन्यतोऽसि शुभदः शुभकृत्त्रमेव ॥४॥
 स्वत्पादतामरसकोपनिवासमास्ते,
 चित्तद्विरेफसुकृतिममयावुदीज ।

सावच्च समृत्तिमकिलिवपतापशापः,

स्थान मयि क्षणमपि प्रतिपाति कञ्चित् ॥५॥

त्वन्नाममत्रमनिश रसनाग्रवर्ति,

यस्यास्तिमोहमदधूर्णननाशहेतु ।

मत्पूहराजिलगणोद्भ्रमकालकूटः,

भीतिर्हि तस्य किमु सनिधिमेतिदेव ॥६॥

तस्मात्त्वमेव शरण तरण भवाब्धौ,

शान्तिप्रदः सकलदोषनिवारणेन ॥

जागर्ति शुद्धमनसा स्मरतो यतो मे,

शान्तिः स्वयं करतले रसभाभ्युपैति ॥७॥

पठना हुआ गृहस्थाचाये शान्त्यर्थं जलधारा छोड़े । पश्चात्—

ॐ हा हीं हू हीं हू अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धा-
चार्योपाध्याय साधय शान्तिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

यह मंत्र धोलकर बर और बधू के मस्तक पर पुष्पाजलि
छेपण करे और इसके बाद—

ॐ हीं अस्मिन् विवाहमांगव्यङ्गमणि आहूयमानदेव-
गणः स्य स्थान गच्छतु अपराधक्षमापनं भवतु ।

इस मन्त्र से विसर्जन करे—जलधारा छोड़े और पुष्पा
जलि छेपण करे ।

सासू का आरता करना ।

घर की सासू या सुशसिनी चतुर्मुख दीपक, अक्षत, रोली कलश आदि रंगे हुए थाल को हाथ में लेकर जायामती का आरता करे और तिलक लगाये ।

गृहस्थाचार्य का आशीर्वाद ।

इस प्रकार आरता हो चुकने के पश्चात् गृहस्थाचार्य दो पुष्प मालाएँ (पुष्पों की न हो तो लवणों की) लेकर निम्नलिखित आशीर्वाद सूक्त मन्त्र पढ़ता हुआ घर और मधू दोर्ता को एक एक पहिना देवे ।

आरोग्यमस्तु चिरमायुरथो शचीव,
शक्रस्य शीतकिरणस्य च रोहिणीव ।
मेघेश्वरस्य च सुलोचनिका ययैषा,
भूयात्तवेप्सितसुखानुभवाधदाश्री ॥ १ ॥

आयुः पुष्टिं करोतु प्रहरतु दुरित मगलालीं धिनोतु ।
सौभाग्यं वृद्धिमुच्चैर्नपतु वितरताद् वैभव सचिनोतु ॥
रामापद्मामिरामा रमयतु सुयशः स्वष्टयित्वातनोतु ।
पुत्र पौत्र प्रताप प्रययतु भवतामार्हतीभक्तिरुचैः ॥२॥

इसके पीछे—

सुचिर जीवताद्देवो जयतादभिनन्दतात् ।

प्रत्यावृत्त्य पुनश्चास्मान्क्षतात्माभिरक्षतात् ॥१॥

यह थोलकर चारों दिशाओं में तथा ऊपर और नीचे भी पुष्प छेपण करे ।

इसके बाद दुलहा और दुलहिन श्रीजिनमदिर जी में जाकर अपने डेरे पर आवें ।

विशेष विधान ।

विवाहहोमे प्रक्रान्ते कन्या यदि रजस्वला ।

त्रिरात्रि दपती स्याता पृथक् शग्पासनाशने ॥ १ ॥

तूयोहि स्नापयिन्वा तां तस्मिन्नग्नौ यथाविधि ।

विवाहहोमे कुर्याता कन्यादानादिकतया ॥ २ ॥

अर्थात् अगर विवाह सम्बन्धी होम का समय निकट होने पर कन्या रजस्वला हो जाय तो वैवाहिक कार्य बद्ध करके उस दिन से तीन दिन तक घर कन्या को अलग अलग रखना चाहिए चौथे दिन स्नान करा कर समस्त होमादि कियार्य करनी चाहिएँ ।

फेरपाटा की विधि ।

यद्यपि फेरपाटा की रीति शास्त्र सम्मत विधि नहीं है, क्योंकि किसी जैन विवाह पद्धति या एतद् विषयक अन्य ग्रन्थ में इसका उल्लेख देने में नहीं आता, परन्तु रातपूताने में इसकी प्रथा है, अतः इस पुस्तक में (~~सप्तमस्कंध-१२-से~~) शिष्यी नवदेव पूजा कराकर इस विधि को करना चाहिये ।

अन्य आवश्यक विधियाँ ।

जैन शास्त्रों में अनेक संस्कारों का वर्णन है, परन्तु वर्तमान में उनका प्रचार नहीं है। अतः हमने अन्य संस्कारों के आवश्यक होते हुये भी यहाँ उन्हीं का उल्लेख करना उचित समझा है जो आज कल कराये जाते हैं ।

